|| ॐ श्री गंगाईनाथाय नमः ||

स्पिरिचुअल साइंस

Spiritual Science

अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, जोधपुर द्वारा प्रकाशित

वर्ष : 10 अंक : 118 जोधपुर : हिन्दी, अंग्रेजी व गुजराती मासिक पत्रिका मार्च– 2018 30/–प्रति

योग

भारतीय 'योग' दर्शन का मूल उद्देश्य 'मोक्ष' है। परन्तु मानव को उस स्थिति तक विकसित होने के लिए, उसके त्रिविध ताप शान्त होने आवश्यक हैं। इस संबंध में महायोगी श्री गोरखनाथजी महाराज ने कहा है– ''यह योग वेदरूपी कल्पतरू का अमर फल है'' जिससे साधक के त्रिविध–ताप:–आदि भौतिक (Mental), आदि दैहिक (Physical) व आदि दैविक (Spiritual) पूर्ण शमन (शांत) होते हैं। हे सत्पुरुषो ! इसका सेवन करो।

www.the-comforter.org

ऑनलाइन शक्तिपात-दीक्षा प्राप्त करने के लिए लॉग-ऑन करें-
Web : www.the-comforter.org

मंत्र दीक्षा के लिये मोबाइल नम्बर डायल करें -
07533006009

www.the-comforter.org

"नाम जप"

"इस शरीर रूपी सुन्दर ग्रन्थ को पढ़ना चाहते हो
तो 'नाम' ही जपो।"

"नाम जप से विघ्नों का नाश होता है,
विघ्नों का अभाव होता है।"

"नाम जप को भगवान् श्री कृष्ण ने
सबसे उत्तम यज्ञ की संज्ञा दी है।"

– समर्थ सद्गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग

"ॐ श्री गंगाई नाथाय नमः"

स्पिरिचुअल साइंस

Spiritual Science

गुरुदेव श्री रामलालजी सियाग

अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, जोधपुर द्वारा प्रकाशित

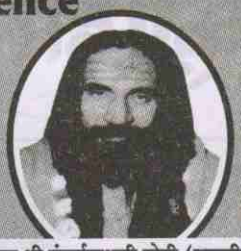

बाबा श्री गंगाईनाथजी योगी (ब्रह्मलीन)

वर्ष : 10 अंक : 118 जोधपुर:- हिन्दी, अंग्रेजी व गुजराती मासिक पत्रिका मार्च – 2018

वार्षिक 300/- द्विवार्षिक : 600/- आजीवन (11 वर्ष) : 3000/- मूल्य 30/-

संस्थापक एवं संरक्षक :
पूज्य सद्गुरुदेव
श्री रामलालजी सियाग
(ब्रह्मलीन)

सम्पादक :
रामूराम चौधरी

कार्यालय :
Spiritual Science
पत्रिका
अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र

पो.बॉक्स नं.41,
होटल लेरिया के पास,
चौपासनी, जोधपुर (राज.) भारत

9784742595

E-mail :
spiritualscienceavsk@gmail.com

Ashram :
Adhyatma Vigyan Satsang Kendra
Near Hotel Leriya,
Chopasani, JODHPUR (Raj.)
INDIA - 342 003
☎ +91 0291-2753699
Mob. : +91 9784742595
e-mail :
avsk@the-comforter.org
Website :
www.the-comforter.org

अनुक्रम

कुण्डलिनी जागरण....4
भारत के दो महामंत्र (सम्पादकीय)....5
सद्गुरुदेव ?....6
उद्देश्य और गुरुदेव का पत्र....7
सद्गुरुदेव का मौन....8
सिद्धयोग....9
हृदय मंथन....10
योगियों की आत्मकथा....11
योग के आधार....12
मेरे गुरुदेव....13
अनुभव–प्रधान युग का आगमन....14
चेतना का विज्ञान....15
परमात्मा से मिलवा सकते हो (कहानी)....16–17
दिव्य ज्ञान प्राप्ति का पथ....18
चित्र पृष्ठ....19–24
अनुभूतियाँ तथा रोगों व नशों से मुक्ति....25–27
दिव्य रूपान्तरण....28
मनुष्य ईश्वर का स्वरूप है....29
भौतिक व आध्यात्मिक समस्याओं का समाधान....30
हठयोग....31
अहं से मुक्ति....32
समाधि....33
दीक्षा....34–37
ध्यान विधि....38

www.the-comforter.org

सद्गुरु कृपा का महाप्रसाद

कुण्डलिनी जागरण

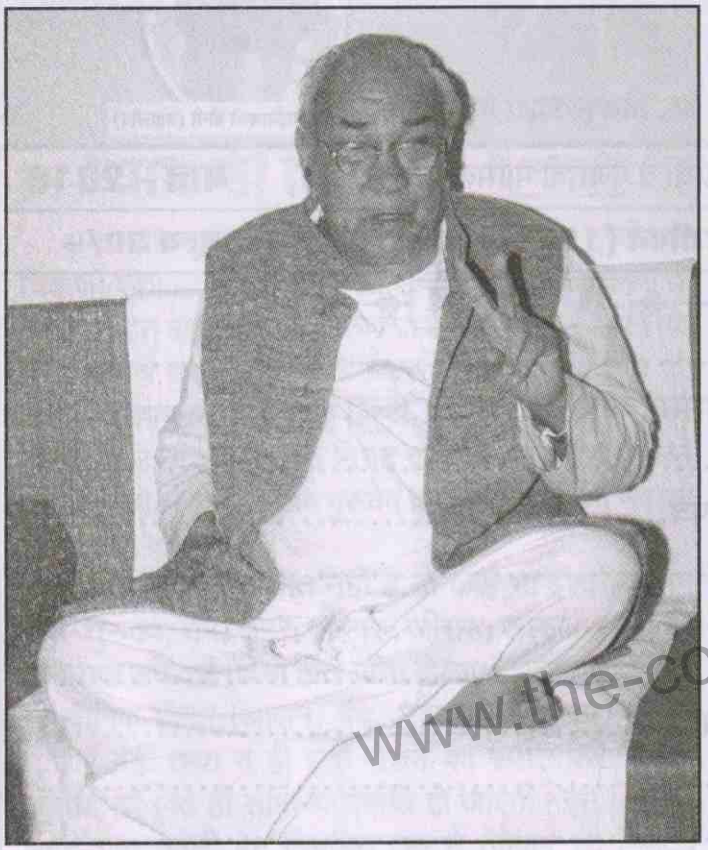

''जब तक कुण्डलिनी शरीर में सुषुप्तावस्था में रहेगी, तब तक मनुष्य का व्यवहार पशुवत रहेगा। और वह उस दिव्य परमसत्ता का ज्ञान पाने में समर्थ नहीं होगा, भले ही वह हजारों प्रकार के यौगिक अभ्यास क्यों न करे।'' गुरुकृपा रूपी, शक्तिपात दीक्षा से जब कुण्डलिनी जाग्रत होती है, तब क्या होता है ? इस संबंध में कहा है-

सुप्त गुरु प्रसादेन, यदा जागृति कुण्डली।
तदा सर्वानी पद्मानि, भिदयन्ति ग्रन्थ्यो पि च।।

(स्वात्माराम, हठयोग प्रदीपिका-3.2)

जब गुरुकृपा से सुप्त कुण्डलिनी जाग्रत हो जाती है, तब सभी चक्रों और ग्रंन्थियों (ब्रह्मग्रंथि, विष्णुग्रंथि और रूद्रग्रंथि) का भेदन होता है। इस प्रकार साधक समाधि स्थिति, जो कि समत्त्व बोध की स्थिति है, प्राप्त कर लेता है। शक्तिपात होते ही साधक को प्रारब्ध कर्मों के अनुसार विभिन्न प्रकार की यौगिक क्रियाएँ (आसन, बंध, मुद्राएँ एवं प्राणायाम) स्वतः ही होने लगती हैं।

शिष्य में जाग्रत हुई शक्ति (कुण्डलिनी) पर गुरु का पूर्ण प्रभुत्व रहता है, जिससे वह उसके वेग को नियंत्रित और अनुशासित करता है।

कुण्डलिनी को हमारे शास्त्रों में जगत् जननी कहा है। वह उस परमसत्ता का दिव्य प्रकाश है, जो सर्वज्ञ है, सर्वत्र है, सर्वशक्तिमान है।''

-समर्थ सद्गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग

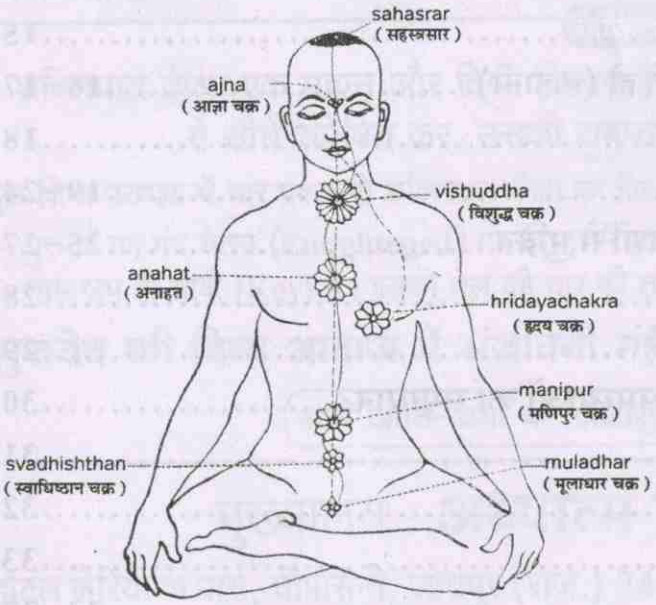

Subtle Centres of Consciousness
(चेतना के सूक्ष्म केन्द्र)

www.the-comforter.org

सम्पादकीय .....

भारत के दो महामंत्र

पहला-"वन्देमातरम्"
दूसरा-"संजीवनी मंत्र"
(जो समर्थ सद्गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग की दिव्य वाणी में सुनना ही संपूर्ण मानव जाति के लिए **सर्वोत्तम** और **सर्वांगीण विकास** का द्योतक है।)

"जब एक महान् जन समुदाय धूल में से उठ खड़ा होता है तो कौनसा मंत्र है अथवा उसे पुनर्जीवित करने वाली कौनसी शक्ति है? भारत में दो महामंत्र है-एक तो "वन्दे मातरम्" का मंत्र है, जो मातृभूमि के प्रति जनता के जाग्रत प्रेम की सार्वभौम पुकार है और दूसरा अधिक गुप्त और रहस्यपूर्ण है जो अभी उद्घाटित नहीं हुआ है।"

-महर्षि श्री अरविन्द घोष (19 फरवरी 1908)

देश के स्वतंत्रता आंदोलन में संपूर्ण भारत की जनता के दिल में राष्ट्र के प्रति राष्ट्रीयता की भावना भरने के लिए बंकिमचंद्र चटर्जी द्वारा लिखित गीत में से एक शब्द लिया गया-"**वन्दे मातरम्**"। इस एक शब्द की गूँज भारत के गगन मण्डल में ऐसे गूँजी कि अंग्रेजों की नींव हिला दी।

संपूर्ण भारत की जनता के मन में, अपने राष्ट्र के प्रति ऐसा राष्ट्र-प्रेम जाग्रत हुआ कि पूरे देश में स्वतंत्रता के लिए समूचे देश में जगह जगह आंदालेन शुरू हो गए। आखिर भारत आजाद हुआ।

'वन्दे मातरम्' नाम से एक अखबार छपता था, जिसमें श्री अरविन्द ने गुप्त रूप से देश के प्रति प्रेम के ऐसे लेख, लिखे कि जनता अपने देश की रक्षा के लिए, मातृभूमि के लिए अपना सब कुछ न्यौछावर करने के लिए तैयार हो गई।

वन्दे मातरम् की गूँज ने पूरे विश्व में भारत माता की जय जयकार कराई।

श्री अरविन्द ने कहा कि भारत के दो महामंत्र है-उसमें से पहले मंत्र का परिणाम हमारे सामने है। देश आजाद हो गया। लेकिन दूसरे मंत्र के बारे में उन्होंने लिखा था कि वह गुप्त और रहस्यपूर्ण है। उस मंत्र के उद्घाटित होने से ही संपूर्ण विश्व मानवता का कल्याण होगा।

वह गुप्त मंत्र भारत की भूमि पर प्रकट हो चुका है और जब तक वह मानव मात्र के हृदय पटल पर तेल की धारावत सिंचित नहीं होगा, तब तक मनुष्य सब प्रकार के दुःखों, कष्टों, रोगों, नशों व देश की अनगिनत समस्याओं से मुक्त नहीं हो सकता।

मानव मात्र के सर्वांगीण विकास के लिए भारत के गुप्त और रहस्यपूर्ण संजीजनी मंत्र के सघन जप से ही मानवता का कल्याण संभव है।

मंत्र विद्या हमारे देश में आदिकाल से चली आ रही है। शब्द से सृष्टि की उत्पत्ति के सिद्धांत पर ही हमारे ऋषियों ने मंत्र की रचना की है। शब्दब्रह्म से परब्रह्म की प्राप्ति का हमारे दर्शन का सिद्धांत पूर्ण सत्य है। यह हमारे दर्शन का उच्चतम दिव्य विज्ञान है। बिना गुरु दीक्षा के कोई मंत्र सिद्ध हो ही नहीं सकता। समर्थ सद्गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग के माध्यम से जो परिवर्तन मानवता में आ रहा है, वह मात्र मंत्र शक्ति का ही प्रभाव है।

सद्गुरुदेव की दिव्य वाणी में मंत्र को सुनकर जपना ही उच्चतम विकास की सीढ़ी है। सद्गुरुदेव सियाग की दिव्य वाणी में मंत्र सुनना ही प्रभावी होता है।

जब मानव के भीतर की गहराईयों में इस संजीवनी मंत्र की झंकार पहुँचेगी, तब सुषुप्त शक्ति कुण्डलिनी जाग्रत होकर, साधक के सप्त कोशों का विकास कर, निर्वाण पद अर्थात् कैवल्य पद पर पहुँचा देगी।

सद्गुरुदेव की आवाज में मंत्र सुनने के लिए डॉयल करें-07533006009 या संस्था की वेबसाइट देखें-

www.the-comforter.org

-सम्पादक

www.the-comforter.org

सद्गुरुदेव ?

www.the-comforter.org

''शांत,स्थिर और निर्भय, यह प्राणी अपना ही नहीं संसार के अनेक जीवों का कल्याण करता हुआ, अपने परम लक्ष्य को प्राप्त कर लेता है। यह होता है आध्यात्मिक संत सद्गुरुदेव की कृपा का प्रभाव। ऐसा संत पुरुष जो मनुष्यों को द्विज बनाने की स्थिति में पहुँच जाता है, 'गुरु' कहलाने का अधिकारी होता है।

गुरु पद कोई खरीदी जाने वाली वस्तु नहीं है। यह पद न किसी जाति विशेष में जन्म लेने से प्राप्त होता है, न कपड़े रंग कर स्वांग रचने से। यह तो मन रंगने की बात है। ईश्वर करोड़ों सूर्यों से भी अधिक ऊर्जा का पुँज है, ऐसी परमसत्ता से जुड़ने के कारण, गुरु पारस बन जाता है। अतः जो मनुष्य इस पारस(गुरु) के संपर्क में आता है, सोना बन जाता है।''

-समर्थ सद्गुरुदेव
श्री रामलाल जी सियाग

अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, जोधपुर

उद्देश्य

- समस्त विश्व के मानवों के कल्याण हेतु बिना किसी वर्ग, वर्ण, जाति, धर्म, राष्ट्रीयता एवं लिंग भेद के इस दिव्य अध्यात्म ज्ञान का प्रचार एवं प्रसार करना एवं समस्त विश्व में अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र स्थापित करना।
- विश्व के समस्त धर्मों के विकारों एवं आडम्बरों से मानव मात्र को मुक्त करना एवं अध्यात्म के मूलभूत सार्वभौम सिद्धांत के अनुसार मन मंदिर में उस परमतत्त्व की प्रत्यक्षानुभूति एवं साक्षात्कार कराना।
- विश्व भर में वैदिक दर्शन की प्रत्यक्षानुभूति एवं साक्षात्कार करवाकर भौतिक जगत् में विज्ञान की तरह उसे सत्य प्रमाणित करना।
- विश्व कल्याण हेतु संपूर्ण विश्व में वैदिक मनोविज्ञान (अध्यात्म विज्ञान) की शिक्षा हेतु प्रबन्ध करना तथा वहीं के लोगों को इस ज्ञान का प्रशिक्षण देने योग्य बनाना।
- विश्व के सकारात्मक स्त्री-पुरुषों को शक्तिपात-दीक्षा देकर चेतन करना तथा उन्हें अपने ही देश में इस ज्ञान के प्रचार-प्रसार का अधिकार देकर मानव शान्ति का पथ प्रशस्त करना।
- सिद्धयोग में वर्णित शक्तिपात दीक्षा द्वारा मानवीय गुणों में परिवर्तन लाया जाकर तमोगुण से रजोगुण, रजोगुण से सतोगुण, सतोगुण से त्रिगुणातीत जाति में बदलकर, उस परम तत्त्व की प्रत्यक्षानुभूति एवं साक्षात्कार कराना।

www.the-comforter.org

आकाश और पृथ्वी का मिलन-योग

ॐ श्री गंगाईनाथाय नमः

मैं, जिस दिव्य विज्ञान के प्रसार-प्रचार के लिए निकला हूँ विश्व उसे अभी पूर्व-पश्चिम के मेल की संज्ञा दे रहा है। क्योंकि मानव-जाति का विकास इसी स्तर तक हुआ है। परन्तु भारतीय दर्शन आकाश और पृथ्वी के मिलन की बात करता है। पश्चिमी संस्कृति को इस दिव्य ज्ञान की बिल्कुल नहीं है।

भारतीय योगदर्शन का मूल उद्देश्य मोक्ष है, रोग है ही नहीं। परन्तु आज, सम्पूर्ण संसार में योग का उद्देश्य मात्र रोग मुक्ति रह गया है। रोग नित्य नये-नये पैदा हो रहे हैं। क्योंकि भारतीय संस्कृति योग पर एकाधिकार मानती है और रखती भी है, परन्तु मानवता में उसे मूर्तरूप नहीं दे पा रही है। केवल शारीरिक कसरत को ही योग की संज्ञा दे रहे हैं। इसके विरोध को, पश्चिम की शाजिश कह कर अपना बचाव करने का प्रयास कर रहे हैं। अपना बचाव कर पाएंगे, सम्भव नहीं लगता।

ॐ श्री गंगाईनाथाय नमः

मुलतान
14-1-2006
AVSK, जोधपुर

सद्गुरुदेव का मौन- शिष्य के लिए अंतर मन की शिक्षा

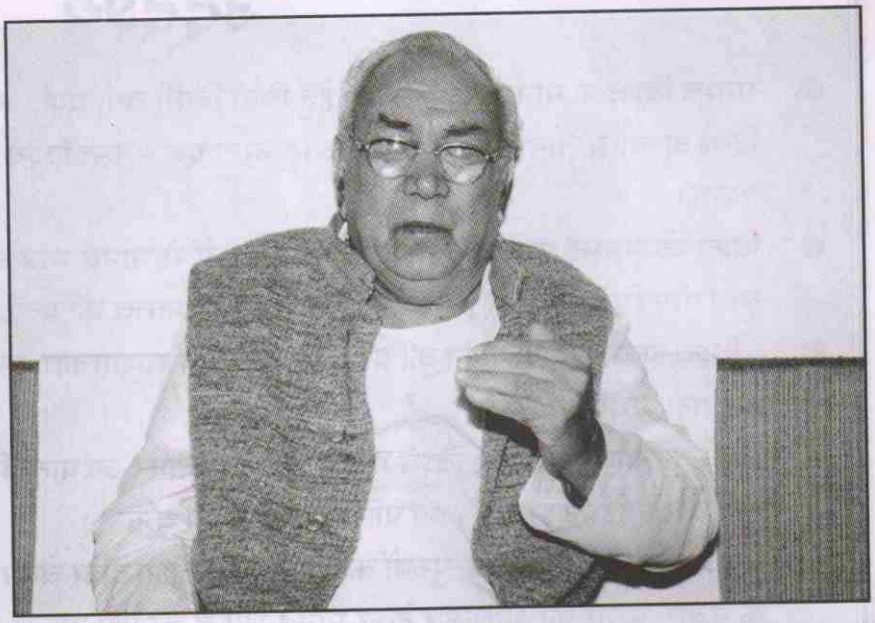

सुनते तथा पढ़ते चले आए हैं कि प्राचीन-कालीन ऋषि एवं महापुरुष मौन-संभाषण के द्वारा, अपने शिष्यों की शंकाओं तथा संशयों का निवारण, मौन उपदेश से करते थे। न कोई प्रश्न करता था, न कोई उत्तर देता था, किन्तु शिष्यों के संशय निवृत्त होते जाते थे। ऐसा आभास होता था जैसे गुरु-शिष्यों के मन, एक दूसरे के इतने समीप आ गए थे कि एक ही प्रतीत होता था। सद्गुरु का यही दक्षिणामूर्ति स्वरूप है। सत्संग होता कहीं दिखाई नहीं देता। वाणी के सभी स्तर शान्त हो जाते हैं।

मन-तन की सम्पूर्ण क्रियाशीलता विलीन हो जाती है। शक्ति भी आत्माभिमुखी अवस्थित होती है। अन्तर से ज्ञान प्रस्फुटित होने लगता है। आत्म-प्रकाश में अज्ञान, तम, संशय, भ्रान्तियाँ चित्त से बाहर भागने लगती हैं। प्रकाश वही है जो अंधकार को मिटा दे। ज्ञान का अर्थ ही अज्ञान का अभाव है।

समता आते ही विषमता विलीन हो जाती है। चेतन के आलोक में जड़ता का क्या काम? जब आनंद की शीतल बयार बहने लगती है तो अज्ञान रूपी तापमान गिर जाता है। असीमता सभी सीमाओं का भक्षण कर जाती है तथा उदारता चित्त की सभी संकुचितताओं को समाप्त कर देती है। उसी प्रकार दक्षिणामूर्ति सद्गुरु का मौन उपदेश एवं सत्संग चित्त की सारी मलीनता धो डालता है, संशयों को निर्मूल कर देता है, वासनाओं को क्षीण कर देता है तथा अज्ञान का नाश कर, ज्ञानोदय होता है।

आज मुझे गुरुदेव के उसी गुरुत्व की अनुभूति हो रही थी।

अन्तर् की मैल जल कर राख हुई जा रही थी। वासनाएँ, कामनाएँ तथा आशाएँ त्राहि-त्राहि करती चित्त से पलायन करने पर विवश थीं एवं भ्रान्तियों का अन्तर में कब से जमा आसन गोल होकर उठता जा रहा था। महाराजश्री मौन थे, ध्यानस्थ थे, किन्तु उनके शरीर से उद्भूत सूक्ष्म अध्यात्म तरंगें, चारों ओर बिखरती हुईं, साधकों के शरीर में प्रवेश करती प्रतीत हो रही थीं। जैसे बरसात की ऋतु में शरीर का अंग-अंग भीग जाता है, उसी प्रकार गुरु कृपा रूपी वर्षा में मन का प्रत्येक् कोना भीगता जा रहा था। गुरुदेव का यह स्वरूप अभी तक मेरे अनुभव में नहीं आया था किन्तु आज प्रत्यक्ष रूप में समझ में आ गया था। संदर्भ 'अंतिम रचना' पुस्तक पृष्ठ-275

www.the-comforter.org

सिद्धयोग :- शक्तिपात दीक्षा व कुण्डलिनी जागरण

भारतीय ऋषियों ने सृष्टि की उत्पत्ति के संबंध में अंतर्मुखी होकर खोज की तो पाया कि संपूर्ण ब्रह्माण्ड, मनुष्य के शरीर में है। जब हमारे ऋषियों ने और गहन शोध किया तो पाया कि इस जगत् को रचने वाला **सहस्रार** में स्थित है और उसकी **शक्ति मूलाधार** में। इन दोनों के कारण ही संसार की रचना हुई है। उस परम पुरुष की शक्ति, उसके आदेश से नीचे उतरती गई और अलग-अलग बंध लगाकर सभी लोकों की रचना करके मूलाधार में स्थित हो गई। इसके **चेतन** होकर **उर्ध्वगमन** करते हुए सहस्रार में पहुँचने का नाम ही **'मोक्ष'** है। मोक्ष की प्राप्ति जीते जी होती है। मरने के बाद मोक्ष की कल्पना करना, एक **मृगमरीचिका** ही है और कुछ नहीं।

गुरु-शिष्य परंपरा में जो शक्तिपात दीक्षा का विधान है। उसके अनुसार गुरु अपनी शक्ति से कुण्डलिनी को चेतन करके ऊपर को चलाते हैं। गुरु का शक्ति पर पूर्ण **प्रभुत्व** होता है। इसलिए वह उस गुरु के आदेश के अनुसार चलती है। क्योंकि यह सहस्रार में स्थित **परमसत्ता** की **पराशक्ति** है। अतः यह मात्र उसी का ही आदेश मानती है। इसका स्पष्ट अर्थ है कि जिस व्यक्ति को सहस्रार में स्थित **उस परम तत्त्व** की सिद्धि हो जाती है, वही इसका संचालन करने का अधिकारी है। यह शक्ति विश्व में, **एक समय** में, मात्र **एक ही व्यक्ति** के माध्यम से कार्य करती है। क्योंकि यह **सार्वभौम सत्ता** है, इसलिए वह व्यक्ति विश्वभर में अभूतपूर्व क्रांतिकारी परिवर्तन करने की सामर्थ्य रखता है।

यह भारतीय दर्शन की विश्व को **अभूतपूर्व** एवं **अद्वितीय** देन है। अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, जोधपुर के संस्थापक व संरक्षक, प्रवृत्तिमार्गी परम श्रद्धेय समर्थ सद्गुरुदेव श्री रामलालजी सियाग अपने सद्गुरुदेव बाबा श्री गंगाईनाथजी योगी ब्रह्मलीन (जामसर) के आदेशानुसार इस **दिव्य ज्ञान** का **महाप्रसाद** बाँटने, विश्व में **अकेले** ही निकल पड़े हैं।

शक्तिपात से जब कुण्डलिनी शक्ति जाग्रत हो जाती है तो **उर्ध्वगमन** करने लगती है। कई जन्मों के संस्कारों के कारण रास्ता अवरूद्ध रहता है। अतः साधक को विभिन्न प्रकार की यौगिक क्रियाएँ जैसेः- आसन, बंध, मुद्राएँ एवं प्राणायाम स्वतः ही होने लगते हैं। वह शक्ति साधक का शरीर, प्राण, मन और बुद्धि अपने अधीन कर लेती है। इस प्रकार जो क्रियाएँ होती हैं उन्हें साधक न तो करने की स्थिति में होता है और न ही रोकने की। वह शक्ति सीधा अपने नियंत्रण में सभी क्रियाएँ स्वयं करवाती है।

गुरुदेव के अनुसार भौतिक विज्ञान के शोधकर्त्ताओं की असंख्य समस्याओं का समाधान, इस ज्ञान से हो जाएगा। समाधि स्थिति में वह परमसत्ता हर समस्या का समाधान शोधकर्ताओं को करवा देगी। इस प्रकार मनुष्य जाति की असंख्य समस्याओं का समाधान हो जाएगा।

गुरु-शिष्य परंपरा में जिस सिद्धयोग अर्थात् महायोग का वर्णन है, उसके आदि गुरु कैलाशवासी भगवान् पर शिव हैं। शिव से यह ज्ञान अमर कथा द्वारा महायोगी **श्री मत्स्येन्द्र नाथ** जी को मिला। उनके परम शिष्य महायोगी श्री गोरखनाथजी ने इस सिद्धयोग से संसार का जो कल्याण किया है, वह सर्वविदित है। यह योग संसार के त्रिविध तापों-आदि **भौतिक, आदि दैहिक व आदि दैविक (Physical, Mental & Spiritual)** का शमन (नाश) करता है।

इसलिए संसार की कोई भी असाध्य बीमारी व वैज्ञानिक समस्या नहीं है; जिसका सिद्धयोग में समाधान न हो **अर्थात् सिद्धयोग में सब कुछ संभव है जो सद्गुरुदेव श्री रामलालजी सियाग की शक्तिपात दीक्षा से मानवता में मूर्तरूप ले रहा है।**

सिद्धयोग से लाभ

समर्थ सद्गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग से मंत्र दीक्षा प्राप्त करने के बाद उनके चित्र का नियमित ध्यान एवं नाम जप द्वारा मातृशक्ति कुण्डलिनी के जागरण से साधक में निम्न परिवर्तन आ जाते हैं-

- **सभी प्रकार के असाध्य रोगों जैसेः-एड्स, कैंसर, डायबिटीज, टी.बी, दमा, ब्लड प्रेशर, मिर्गी, बवासीर, हीमोफीलिया, हेपेटाइटिस व गठिया आदि से पूर्ण मुक्ति संभव।**
- **सभी प्रकार के मानसिक रोगों जैसेः-तनाव, पागलपन, उन्माद, फोबिया (भय), चिंता, अनिद्रा आदि से पूर्ण मुक्ति संभव।**
- **सभी प्रकार के नशों जैसेः- शराब, अफीम, हेरोइन, भांग, तम्बाकू (बीड़ी, सिगरेट व जर्दा) आदि से बिना किसी परेशानी के छुटकारा।**
- **विद्यार्थियों की एकाग्रता एवं याददाश्त में नाम जप व ध्यान द्वारा अभूतपूर्व वृद्धि।**
- **आध्यात्मिकता के पूर्ण ज्ञान के साथ भूत, वर्तमान एवं भविष्य की घटनाओं को ध्यान के समय प्रत्यक्ष देखना और सुनना।**
- **गृहस्थ जीवन में रहते हुए 'भोग एवं मोक्ष' दोनों तत्त्वों की सहज प्राप्ति। इसके साथ ही जीवन की समस्त सांसारिक परेशानियों से छुटकारा।**
- **वैदिक दर्शन द्वारा ईश्वर की प्रत्यक्षानुभूति एंव साक्षात्कार।**

❖❖❖

www.the-comforter.org

गतांक से आगे...

"हृदय मंथन"

एक सज्जन ने कहा, "महाराज जी ! इस स्थिति को सुधारने का उपाय क्या है ?"

महाराजश्री ने कहा, "कोई भी नहीं। मनुष्य के पास मानव समाज को सुधारने का कोई उपाय नहीं, किन्तु भगवान् की लाठी ही वह आवाज है। वह कब पड़ेगी, कैसे पड़ेगी तथा क्या करेगी, इसे केवल भगवान् ही जानते हैं, पर कभी न कभी पड़ेगी अवश्य, फिर किस देश का क्या होगा ? किस की कैसी गति होगी ? इसको भी भगवान् ही जानते हैं।

भगवान् श्री कृष्ण ने गीता में कहा भी है कि जब-जब धर्म की हानि होती है तो मैं आता हूँ। दुष्टों का नाश करता हूँ, धर्म की स्थापना करता हूँ।"

महाराजश्री के सिरहाने, एक छोटे से टेबल पर, पानी का भरा एक ताम्बे का लोटा तथा एक गिलास रखा रहता था। दोपहर में आराम से उठ कर तथा प्रातः काल सो कर उठने के पश्चात् महाराजश्री जल ग्रहण करते थे।

नित्य प्रति की भाँति मैंने लोटे को माँज कर, जल भर कर, टेबल पर रखा तो लोटै पर दाग पड़े देखकर, गुरु महाराज ने कहा, "यदि तुम लोटे के दाग दूर नहीं कर सके तो चित्त की मलिनता कैसे दूर करोगे ?" मैं हक्का-बक्का सा मूरत बना, खड़ा रह गया। समझ नहीं आ रही थी कि क्या कहूँ। महाराजश्री ने कितनी बड़ी बात लोटे के माध्यम से कह दी थी। (उस लोटे की तरह चित्त की शुद्धि के लिए मंत्र जप व नियमित ध्यान बहुत ही जरूरी साधन है)

महाराजश्री ने ही मौन तोड़कर कहा, "देखो ! बरतन माँजते समय, कपड़े धोते समय या झाढ़ू लगाते समय अपने मन पर लक्ष्य रखो, जिस प्रकार लोटे के दाग मिटा रहा हूँ, ऐसे ही मन के दागों को भी दूर करना है। तब लोटा माँजना, केवल लोटा माँजना ही नहीं रह जाएगा, साधना हो जाएगा। यदि जगत् के प्रत्येक व्यवहार को, कर्म को विचारपूर्वक किया जाए तो उसे साधन का रूप दिया जा सकता हैं यदि यह सोच लिया जाए कि पानी ही तो भर कर रखना है, दाग छूटे तो क्या, और नहीं छूटे तो क्या, तो पानी तो अवश्यक भरा जा सकेगा पर दाग रह जाएँगे। यही लापरवाही, तुम्हारे चित्त शुद्धि के मार्ग में व्यवधान बन कर खड़ी हो जाएगी। व्यवहार तथा साधन करते हुए भी मन निर्मल नहीं हो पाएगा।

"जिस प्रकार बर्तन पर पड़े दाग दूर करने के लिए बर्तन को घिसना पड़ता है, उसी तरह मन को निर्मल बनाने के लिये मन को भी रगड़ना पड़ता है। **यह रगड़े भक्ति अथवा योग के हो सकते हैं**, किन्तु वास्तविक रगड़े व्यवहार में लगते हैं। जब रगड़े लगते हैं तो सामान्य व्यक्ति चिल्लाना आरंभ कर देता है। संभव है इस चिल्लाहट से रगड़ें लगने बन्द भी हो जाएँ, किन्तु मलिनता रह जाती है।

साधक तथा संसारियों में यही अंतर है। संसारी रगड़े लगने पर चिल्लाता है, किन्तु साधक उन्हें धैर्यपूर्वक सहन करता है पर मन की घिसाई में व्यवधान नहीं डालता। वह यही चाहता है कि मन मँजता रहे तथा अधिक से अधिक चमक आती रहे । जिस प्रकार दीपक को प्रकाश फैलाने के लिए स्वयं जलना पड़ता है उसी प्रकार साधक भक्त को भी मन निर्मलता के लिए, मन को भक्ति, योग तथा कर्म रूपी अग्नि में तपाना पड़ता है।

"जिस प्रकार लोटे को यदि, प्रतिदिन माँजते रहे तो लोटा साफ भी बना रहता है तथा श्रम भी कम पड़ता है, वैसे ही प्रतिदिन माँजने का स्वभाव ही सतत् साधन कहा जाता है। मन पर जगत् का प्रभाव पड़ता ही रहता हैं जाने अनजाने मलिनता जमती ही रहती हैं यदि भक्ति, ज्ञान, योग, वैराग्य तथा पश्चाताप के साबुन या राख से मन को नित्यप्रति शुद्ध किया जाए तो मन भी निर्मल बना रहता है तथा परिश्रम भी अधिक नहीं करना पड़ता।

सेवा भाव से सभी कर्मों का अनुष्ठान, आरंभ में विशेष सहायक होता है। तुम शक्तिपात् में दीक्षित हो, आन्तरिक क्रियाओं की तुम्हें अनुभूति है, आज की संचित मलिनता प्रातः काल के साधन में क्षीण होती है।

प्रश्न पूर्व संचित तथा प्रारब्ध का है, भविष्य में संचित होने वाले संस्कारों का है। उसी के लिए सारी सावधानी, सतत् साधन, समर्पण भाव तथा सेवा-भाव की आवश्यकता हैं यदि द्रष्टाभाव तथा समर्पण बना रहे तो मन को शुद्ध करने का कार्य, शक्ति की क्रियाओं में शीघ्रतापूर्वक होता है। पहले मन पर गहरे दाग पड़ते थे, जो धीरे-धीरे मद्धम होते जाएँगे, किन्तु उनके क्षय की निरन्तर व्यवस्था रखना पड़ेगी।

संदर्भ-स्वामी शिवोमतीर्थ
'हृदय मंथन-1

क्रमशः अगले अंक में...

www.the-comforter.org

योगियों की आत्मकथा

-परमहंस श्री योगानंद

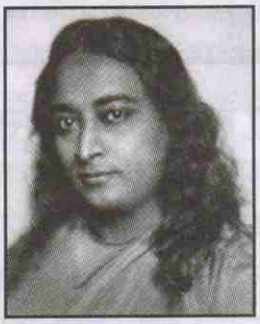

पिताजी को आशा थी कि वे मेरी आध्यात्मिक पिपासा एक विद्वान दार्शनिक से शिक्षा दिलाकर शान्त कर देंगे।

परन्तु परिणाम रहस्यपूर्ण ढंग से उलटा हुआ: मेरे नवनियुक्त शिक्षक मुझे शुष्क बौद्धिक ज्ञान देने के बदले मेरी **ईश्वराकांक्षा के अंगारों को हवा देने लगे।** पिताजी को यह ज्ञात नहीं था कि स्वामी केवलानंदजी लाहिड़ी महाशय के एक उन्नत शिष्य थे। उस अद्वितीय गुरु के सहस्रों शिष्य थे, जो उनकी अमोघ दैवी शक्ति के चुम्बकीय प्रभाव से अपने आप उनकी ओर आकर्षित हो गये थे। मुझे बाद में ज्ञात हुआ कि लाहिड़ी महाशय, केवलानन्दजी को प्राय: ऋषि कहकर संबोधित करते थे।

लम्बे घुंघराले केश मेरे शिक्षक के सुन्दर मुख-मण्डल की शोभा बढ़ा रहे थे। उनकी काली आँखें शिशु-नेत्रों की भाँति निश्चल और भोली थी। उनके छरहरे शरीर की सब गतिविधियों में एक प्रशान्त गम्भीरता थी। सदैव शान्त और स्नेहमय केवलानन्दजी अनन्त ब्रह्म के चैतन्य में दृढ़ता के साथ स्थिर हो गये थे। हम दोनों के सहवास के अनेक आनन्दमय प्रहर गहरे क्रिया योग ध्यान में बीतते थे।

केवलानन्दजी प्राचीन शास्त्रों के सुप्रतिष्ठित पंडित थे; उनके इस अगाध ज्ञान के कारण ही उन्हें शास्त्री महाशय की उपाधि मिली थी, जिसके द्वारा वे प्राय: सम्बोधित किये जाते थे। परन्तु संस्कृत पांडित्य में मेरी प्रगति अनुल्लेखनीय थी। मैं सदा इसी सुयोग की ताक में रहता था कि किस तरह नीरस व्याकरण से जान बचे और योग तथा लाहिड़ी महाशय की चर्चा शुरू हो। मेरे शिक्षक महोदय ने एक दिन लाहिड़ी महाशय के साथ बिताये गये अपने जीवन के बारे में कुछ बताने का अनुग्रह किया।

''मुझे दस वर्ष तक लाहिड़ी महाशय के पास रहने का दुर्लभ सौभाग्य प्राप्त हुआ था। बनारस में उनका घर मेरा रात्रिकालीन इष्ठ तीर्थस्थान था। नीचे के तल्ले पर सामने वाली छोटी-सी बैठक में वे सदा विराजमान रहते थे। लकड़ी की चौकी पर **पद्मासन** में बैठे हुए वे अपने शिष्यों से एक माला की भांति अर्धवृत्ताकार में घिरे रहते थे। उनकी आँखें चमकती हुई तथा **ईश्वरीय आनंद** से नाचती रहती थीं।

उनकी सदैव अर्द्धोन्मीलित रहनेवाली आँखें भीतर के दूरदर्शी गोलक में से सदा शाश्वत-आनंद के लोक में झाँकती रहती थी। वे कदाचित् ही अधिक समय के लिये बोलते थे। यदा-कदा उनकी दृष्टि किसी ऐसे शिष्य पर केन्द्रित हो जाती जिसे सहायता की आवश्यकता होती थी; तब शांतिप्रद वचन उनके मुख से प्रकाश के हिमप्रपात की भाँति झरने लगते थे।

''गुरुदेव के एक दृष्टिपात मात्र से मेरे अन्दर एक अवर्णनीय शान्ति खिल उठती थी। मैं उनकी सुगन्ध से भर जाता था जैसे वह अनंत के किसी पद्म की सुगंध हो। उनके साथ अनेकानेक दिनों तक एक शब्द भी बोले बिना भी रहना एक ऐसा अनुभव था जो मेरे सम्पूर्ण अस्तित्व को परिवर्तित कर देता। यदि मेरी एकाग्रता में कोई अदृश्य बाधा आ खड़ी होती तो गुरु के चरणों में ध्यान करने बैठ जाता। वहाँ सबसे सूक्ष्म अवस्थाओं का भी मुझे सहजबोध हो जाता। ऐसी अनुभूतियाँ मुझे निम्नतर कोटि के गुरुओं के सान्निध्य में नहीं होती थीं। **गुरुदेव ईश्वर के सजीव मन्दिर थे, जिनके गुप्तद्वार भक्ति के माध्यम से सभी शिष्यों के लिये खुले रहते थे।**

''लाहिड़ी महाशय शास्त्रों के पुस्तकीय टिकाकार नहीं थे। वे सहज ही 'दैवी पुस्तकालय' में डुबकी लगा लेते थे। शब्दों का फेन और विचारों की फुहारें उनकी सर्वज्ञता के फव्वारे से फूट पड़ते थे। वेदों में युगों पहले अस्तमान हुए गहन दर्शनों के विज्ञान के रहस्यों को खोलने का अद्भुत कौशल उन्हें प्राप्त था। प्राचीन शास्त्रों में उल्लिखित चेतना के विविध स्तरों को समझाने का अनुरोध करने पर वे मुस्कराकर स्वीकार कर लेते थे।

'मैं अभी उन अवस्थाओं में प्रवेश करता हूँ और अपनी अनुभूतियाँ तुम्हें बताता हूँ।' इस प्रकार वे उन गुरुओं से बिल्कुल विपरीत थे जो शास्त्रों को कंठस्थ कर बिना किसी वास्तविक अनुभूति के अपनी कल्पना से ही उनका अर्थ बताते हैं।

क्रमश: अगले अंक में...

www.the-comforter.org

"योग के आधार"

-श्री अरविन्द

स्थिरता, शांति व समता

पहले इस बात को स्मण रखो कि साधना को निर्विघ्न बनाने के लिये चंचल मन और प्राण की शुद्धि से उत्पन्न एक आंतरिक अचंचलता की सबसे पहले आवश्यकता है। उसके बाद यह याद रखो कि बाहरी कर्म करते समय शक्ति की उपस्थिति का अनुभव करना ही साधना में बहुत कुछ अग्रसर होना है और इसे पर्याप्त आंतरिक उन्नति हुए बिना, नहीं प्राप्त किया जा सकता।

संभवतः जिस बात को तुम इतना अधिक आवश्यक अनुभव करते हो पर जिसका ठीक-ठीक वर्णन नहीं कर पाते, वह है इस बात का सतत् और स्पष्ट अनुभव होना कि श्रीमां की शक्ति तुम्हारे अंदर कार्य कर रही है, ऊपर से अवतरित हो रही है और तुम्हारी सत्ता के विभिन्न स्तरों को अधिकृत कर रही हैं।

यह अनुभव प्रायः ही आरोहण और अवरोहण की द्विविध गति आरंभ होने के पहले हुआ करता है; समय आने पर यह अनुभव तुम्हें भी अवश्य होगा।

इन बातों के प्रत्यक्ष रूप में आरंभ होने में बहुत लंबा समय लग सकता है, विशेषकर उस अवस्था में जब कि मन को बहुत अधिक क्रियाशील होने का अभ्यास हो और निश्चल-नीरव होने की आदत उसमें बिल्कुल न हो। यह (मन की) सक्रियता एक तरह का पर्दा डाल देती है औज जब तक यह रहती है तब तक मन की चंचल यवनिका के पीछे बहुत-सा कार्य करना पड़ता है और साधक यह समझता है कि कुछ भी नहीं हो रहा है जब कि उसे तैयार करने के लिये वास्तव में बहुतसा आरंभिक कार्य होता रहता है।

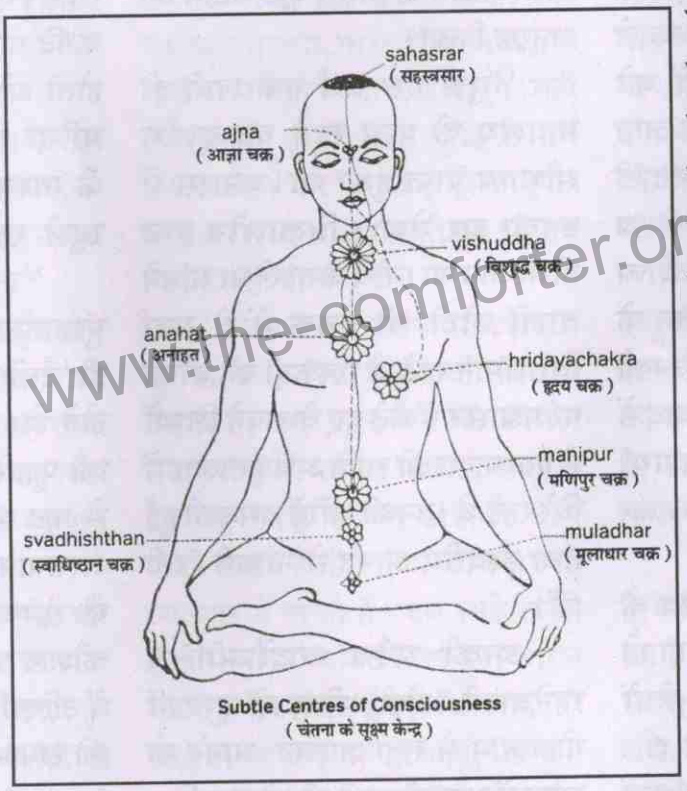

Subtle Centres of Consciousness
(चेतना के सूक्ष्म केन्द्र)

अगर तुम बहुत शीघ्र और प्रत्यक्ष उन्नति करना चाहो तो यह केवल तभी हो सकता है, जब तुम निरंतर आत्म-निवेदन के द्वारा अपने हृत्पुरुष को सामने ले आओ। इसके लिये तीव्र अभीप्सा करो, पर अधीरता को मत आने दो।

साधना के लिये बलवान् मल, शरीर और प्राणशक्ति की आवश्यकता होती है। इस बात के लिये विशेष रूप से प्रयास करना चाहिये कि तमस् बाहर निकाल दिया जाये और प्रकृति के इस ढांचे में बल और शक्ति का संचार हो :

क्रमशः अगले अंक में...

गतांक से आगे....

!! मेरे गुरुदेव !!

-स्वामी विवेकानन्द

भारत में कोई धार्मिक ग्रन्थ ऐसा नहीं है, जिसमें ये भाव प्रमुख न हों। मनुष्य को ईश्वर-प्राप्ति करनी चाहिए, ईश्वर का अनुभव करना चाहिए, ईश्वर का प्रत्यक्ष दर्शन करना चाहिए तथा उससे बातचीत करनी चाहिए, यही धर्म है। भारत का वातावरण ऐसे साधु-सन्तों की कथाओं से परिपूर्ण है, जिन्हें ईश्वर का साक्षात्कार हुआ है।

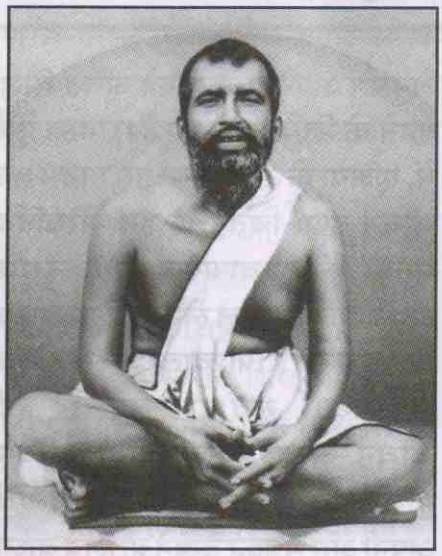

जब निर्धनता के कारण जीविका के लिए उसे पूजारी-पद ग्रहण करना पड़ा था, क्योंकि उसको केवल यही कार्य आसानी से प्राप्य था। बंगाल में ऐसे बहुत से कवि हो गये हैं, जिनके पद पीढ़ी दर पीढ़ी गाये जाते रहे हैं। उनका गान कलकते की गलियों तथा प्रत्येक गाँव में होता है। इनमें से अधिकतर गीत धार्मिक हैं और इनका मुख्य भाव जो कि भारत के सब धर्मों की विशेषता है, ईश्वर-प्राप्ति है।

भारत में कोई धार्मिक ग्रन्थ ऐसा नहीं है, जिसमें ये भाव प्रमुख न हों। मनुष्य को ईश्वर-प्राप्ति करनी चाहिए, ईश्वर का अनुभव करना चाहिए, ईश्वर का प्रत्यक्ष दर्शन करना चाहिए तथा उससे बातचीत करनी चाहिए, यही धर्म है। भारत का वातावरण ऐसे साधु-सन्तों की कथाओं से परिपूर्ण है, जिन्हें ईश्वर का साक्षात्कार हुआ है। इसी प्रकार के उच्च तत्त्व उनके धर्म के आधार हैं और ये सब प्राचीन ग्रन्थादि उन महा पुरुषों द्वारा लिखी गयी थीं, जिन्होंने उन बातों का प्रत्यक्ष अनुभव किया था; और ये सब बातें केवल उन्हीं पुरुषों द्वारा समझी जा सकती हैं, जो स्वयं उस आध्यात्मिक उच्च अवस्था को पहुँच गये हों। इन ग्रन्थकारों का कहना है कि सत्य की सिद्धि इसी जीवन में हो सकती है और वह भी प्रत्येक मनुष्य को, और इस ध्येय को प्राप्त करने के लिए प्रत्येक मनुष्य में एक प्रकार की शक्ति और इस शक्ति का विकास होने पर धर्म का आरम्भ होता है। सब धर्मों का यही एक केन्द्रीय भाव है।

यही कारण है कि कभी-कभी हम किसी ऐसे मनुष्य को पाते हैं, जो असाधारण वक्तृत्व-शक्ति तथा सुन्दर तर्कशास्त्र की योग्यता रखते हुए, उच्चतम तत्त्वों का प्रचार करता है, परन्तु फिर भी उसको श्रोता ही नहीं मिलते। परन्तु दूसरी ओर हम यह देखते हैं कि एक अत्यन्त सामान्य मनुष्य, जो शायद अपनी मातृभाषा भी कठिनता से बोल सकता है, अपने ही जीवन-काल में लगभग आधे राष्ट्र के लिए देवता तुल्य पूजनीय हो जाता है।

जब भारत में किसी प्रकार से यह बात दूर तक फैल जाती है कि अमुक मनुष्य को आत्मज्ञान प्राप्त हो गया है, उसे धार्मिक सत्य का प्रत्यक्ष अनुभव हो चुका है तथा उसके लिए धर्म और आत्मा का अमरत्व और ईश्वर आदि विषय जटिल नहीं रह गये हैं, तो तमाम स्थानों से लोग उसके दर्शन करने आते हैं और धीरे-धीरे उसकी देवता के समान पूजा करने लगते हैं।

जिस मन्दिर में यह बालक पूजा करता था, उसमें आनन्दमयी जगन्माता की एक मूर्ति थी। इस बालक को सायं-प्रायः पूजा करनी पड़ती थी और धीरे-धीरे उसके मन में इस विचार ने अधिकार जमा लिया कि 'क्या इस मूर्ति में किसी का वास है? क्या यह सत्य है कि इस संसार में आनन्दमयी जगन्माता हैं? क्या यह सत्य है कि इस विश्व का सारा व्यवहार वे चलाती हैं? अथवा यह सब स्वप्नवत् ही है? क्या धर्म में वास्तव में कोई सत्यता है?' इस प्रकार के तर्क-वितर्क हिन्दू बालक के मन में उठते हैं।

इस प्रकार का सन्देह कि **'जो कुछ मैं कर रहा हूँ, क्या वह वास्तव में सच है?'**-हमारे देश का विशेषत्व है। साथ ही साथ ईश्वर तथा आत्मा सम्बन्धी परिकल्पनाओं से हम सन्तुष्ट नहीं होते, यद्यपि इस प्रकार की सभी परिकल्पनाएँ हमारे सामने सदैव रहती हैं। केवल ग्रन्थों तथा कोरे मत-प्रतिपादन से हमें कभी सन्तोष नहीं होता। परन्तु जो एक विचार हमारे सहस्त्रों देशवासियों को अभिभूत कर लेता है, वह है सत्य का साक्षात्कार या सत्य की प्रत्यक्ष उपलब्धि का। प्रश्न उठता है कि क्या ईश्वर का अस्तित्व सत्य है और यदि है तो क्या उसे मैं देख सकता हूँ?

क्या मुझे सत्य की प्रत्यक्ष उपलब्धि हो सकती है? पाश्चात्य को ये सब बातें शायद व्यवहारिक न जचें, परन्तु हम लोगों के लिए तो ये नितान्त व्यावहारिक हैं और इसके निमित हम अपने जीवन का भी उत्सर्ग करने को तैयार हैं।

संदर्भ-विवेकानंद वॉल्यूम-7

क्रमशः अगले अंक में...

www.the-comforter.org

अनुभव-प्रधान युग का आगमन

अतः, व्यक्ति का तथा संसार का, जिसका व्यक्ति सदस्य है, सत्य एवं विधान खोज निकालने के लिये, यह व्यक्तिप्रधान युग मानवजाति का मौलिक प्रयास है। परम सत्य को खोज निकालने के लिए, आत्मा को सत्य से साक्षात्कार करने के लिए जिस अनुभूति और जीवन के अनुभव की जरूरत है, उस अनुभव की शुरूआत हो चुकी है। आगामी मानव जाति दिव्य जीवन धारण करेगी, उस विषय पर श्री अरविन्द ने सविस्तार वर्णन किया है कि आत्मा के पोषण के लिए एक अनुभव प्रधान युग का आगमन हो रहा है जिसमें मनुष्य पूर्णता प्राप्त करेगा।

उसे तो आवश्यकता नहीं है विशालतर संसिद्धि की ओर प्रगति करने की, इसमें यदि पुरातन भाव लिये भी जायें तो उन्हें रूपांतरित तथा अनिक्रांत करके ही लेना होगा। कारण, वस्तुओं का आधारभूत सत्य सदा एकरस और चिरंतन होता है, परंतु उसके मानसिक रूप, उसके जीवन के रूप एवं उसकी भौतिक आकृतियाँ निरंतर विकास तथा परिवर्तन की माँग करती हैं।

यह सिद्धांत एवं आवश्यकता ही व्यक्तिवाद तथा बुद्धिवाद के युग को उचित ठहराते हैं और क्रमविकास के चक्र में इसे अनिवार्य युग की स्थिति प्रदान करते हैं, फिर वह युग चाहे कितना भी अल्पजीवी क्यों न हो। आलोचनात्मक तर्क का, जो अधिकांश में अपने कार्य में विध्वंसकारी होता है, अस्थायी आधित्य भी मानवजाति के विकास के लिये परम आवश्यक है।

भारतवर्ष में राष्ट्रीय विचार तथा जीवन में बौद्धकालीन महाक्रांति से लेकर अब तक आत्मा तथा जीवन के सत्य को पुनः आविष्कृत करने तथा दमघोंटू परंपराओं के परदे के पीछे तक पहुँचने के लिये निरंतर प्रयत्न होते रहे हैं, किंतु वे प्रयत्न एक ऐसे विशाल तथा सहिष्णु आध्यात्मिक तर्क के द्वारा, एक नमनीय आत्मिक अंतर्बोध और गंभीर अनुभवात्मक अन्वेषण के द्वारा संपादित हुए हैं। जो पर्याप्त उग्र और विनाशकारी नहीं थे। यद्यपि वे विशाल आंतरिक और बाह्य परिवर्तनों का कारण तो बने, परंतु प्रधानता प्राप्त परंपराओं के जुए से मुक्त होने में कभी सफल नहीं हो पाये। उनमें से कुछ आंदोलनों में विघटनात्मक एवं विध्वंसात्मक बौद्धिक आलोचना के कार्य का यद्यपि सर्वथा अभाव नही रहा, परंतु वह कभी बहुत आगे भी नहीं बढ़ पाया।

विध्वंसक कारक शक्ति से अपर्याप्त सहायता प्राप्त निर्माणकारक शक्ति अपने नव-निर्माण के लिये विस्तृत और विमुक्त क्षेत्र नहीं प्राप्त कर सकी। युरोपीय प्रभाव तथा दबाव के काल में ही विचारों तथा वस्तुओं के मौलिक एवं प्रभावशाली पुनर्मूल्यन के नवीन युग का सूत्रपात करने के लिये पर्याप्त शक्तिशाली परिस्थितियाँ एवं प्रवृत्तियाँ अस्तित्व में आयीं।

इन प्रभावों की विशिष्ट शक्ति सदा-अथवा कम से कम अभी निकट भूतकाल तक बुद्धिवादी, उपयोगितावादी और व्यक्तिवादी रही है। इसने राष्ट्रीय मानस को, प्रत्येक वस्तु को एक नवीन, जिज्ञासापूर्ण एवं आलोचनात्मक दृष्टिकोण से देखने के लिये बाध्य किया है, और वे लोग भी, जो वर्तमान को 'स्थायी' बनाना चाहते हैं अथवा भूतकाल को फिर से लौटा लाना चाहते हैं, अचेतन अथवा अर्धचेतन रूप में, इस नूतन दृष्टिकोण और इसके तर्क के समुचित मानदंडों के अनुसार अपने प्रयत्नों को उचित सिद्ध करने के लिये बाध्य हुए हैं। समस्त पूर्व में, एशिया के अनुभव प्रधान मानस को जीवन तथा चिंतन के इन परिवर्तित मूल्यों की आवश्यकता के अनुसार अपने आपको ढाल लेने के लिये बाध्य किया जा रहा है। पाश्चात्य ज्ञान के दबाव से तथा सर्वथा बदली हुई जीवन-आवश्यकता एवं जीवन परिस्थिति के आग्रह के कारण पूर्व अपनी ओर मुड़कर देखने के लिये बाध्य हुआ है। जो कार्य पूर्व ने अपने अंतर की प्रेरणा पाकर भी नहीं किया था वहीं अब उसे बाह्य आवश्यकता के दबाव के कारण बरबस करना पड़ा है और इस बाह्य प्रवृत्ति के साथ, जहाँ बहुत लाभ जुड़ा हुआ है वहाँ बड़े संकट भी हैं।

अतः, व्यक्ति का तथा संसार का, जिसका व्यक्ति सदस्य है, सत्य एवं विधान खोज निकालने के लिये, यह व्यक्तिप्रधान युग मानवजाति का मौलिक प्रयास है। जैसा कि यूरोप में हुआ, यहाँ भी इसका आरंभ, विशेषकर धर्म के क्षेत्र में, उस आच्छादित, विरूप अथवा विकृत कर दिया है। परंतु इसे उस प्रथम पग से आगे अन्य सत्यों की ओर बढ़ना है और अंत में मानव जीवन और कर्म के समस्त क्षेत्रों में विचार और व्यवहार की आधारशिलाओं का सामान्य अनुसंधान करना है।

-संदर्भ-श्री अरविन्द की 'मानव-चक्र' पुस्तक से

क्रमशः अगले अंक में...

www.the-comforter.org

चेतना का विज्ञान

श्री अरविन्द
'मानव से अतिमानव की ओर'

सबसे सरल और प्रारंभिक मनोविज्ञान सीमित सप्तक के तीन सुरों के साथ संबंध रखता है-शरीर और भौतिक क्षेत्र तथा उसके संघात, प्राण, शरीर और उसकी जैव तथा दैहिक प्रक्रियाएँ, मानसिक सत्ता और उसकी सचेतन अनुभूतियाँ और क्रियाएँ। यह आरोही सोपान है।

भौतिक क्षेत्र की प्रकृति पहला तथ्य है। वही बाकी सब चीजों का निर्णय करती है। वह ऐसे संघात देती है जो चेतना, संस्कार, बिंब और विषय को जगाते हैं, जो उसके द्रव्य हैं, जो उसकी समस्त कल्पनाओं का आरंभ **बिंदु और आधार** हैं। शरीर जो उसका सहारा, उपकरण, क्रिया का आलंब है, आत्मा के भाव का भौतिक अवसर है।

ऐसा मालुम होता है कि शरीर व्यष्टिगत चेतना का एकमात्र या निर्णायक कारण नहीं तो मुख्य कारण है।

जो शरीर का नहीं है, वह शरीर के बाहर भौतिक क्षेत्र का है। चेतना के अंदर जो कुछ भौतिक क्षेत्र का नहीं है, फिर भी वह उससे निकलता हुआ मालूम होता है, भौतिक अनुभूति से उसका परिणाम, विकास या विकृति है।

शरीर में जीवन प्रथम भौतिक सत्ता में आवश्यक परिवर्तन है जिसके हस्तक्षेप के बिना चेतना किसी भौतिक रूप में अभिव्यक्त होने में सक्षम नहीं होती। **परमाणु भौतिक द्रव्य का रूप है, पत्थर भौतिक शरीर है, परन्तु इन चीजों में या तो जीवन है ही नहीं या उस बिंदु तक विकसित नहीं हुआ है,** जहाँ चेतना की अभिव्यक्ति संभव होती है। परमाणु और पत्थर में चेतना या तो गुप्त और हमारे लिये अनभिव्यक्त रहती है या फिर दबी हुई, संभावित या शून्य।

किसी मात्रा में जीवन मानसिक चेतना के **अवतरण** के लिये काफी नहीं होता। सप्तक के इस तीसरे सुर के लिये उसकी कुछ अधिक मात्रा या किसी अनिवार्य प्रकार के संगठन की जरूरत है। वनस्पतियाँ जीवित है, एक तरह से तीव्र रूप से जीवित हैं। उनमें हमारी तरह **स्नायु संस्थान** है परंतु उनमें चेतना या तो है ही नहीं या प्रच्छन्न है, कम-से-कम हमारे लिये अव्यक्त, दबी हुई या हमसे भिन्न प्रकार की अवमानसिक स्नायविक चेतना है, मानसिक नहीं।

प्राण, जैव परिस्थितियाँ और कुछ दैहिक प्रक्रियाएँ जुटाता है जो भौतिक रूप से सचेतन मानसिक सत्ता की क्रियाओं के मूल में होती है।

प्राण, मन और शरीर के बीच मध्यवर्ती गतिशील कड़ी देता है।

प्राण की दो क्रियाएँ हैं-जो मन के काम आती है; स्नायविक उपकरण में आवश्यक प्राणशक्ति और यांत्रिक विकास तथा परिवर्तन की क्षमता। स्नायविक उपकरण में प्राणशक्ति के बिना शरीर में चेतना संभव है। विकसित होते हुए परिवर्तनों के बिना, वह जैसे निम्नतर पशुओं में है, उस तरह रह तो सकती है परंतु जैसे मनुष्य में फैलती है, उस तरह फैल नहीं सकती।

स्नायविक उपकरण मन के लिये आवश्यक प्रारंभिक दैहिक तथ्य है। प्राण-शक्ति में स्नायविक संस्थान नहीं होता जो एक भौतिक तत्त्व है, बल्कि एक नयी शक्ति या ऊर्जा होती है जिसका यह संस्थान वाहन है-वह है स्नायविक संप्रेषण, स्नायविक आवेश और स्नायविक निरावेश (चार्ज और डिस्चार्ज)। यह शक्ति मानसिकता की रचना करने के लिये पर्याप्त नहीं है क्योंकि वनस्पति में भी ये शक्तियाँ होती है परन्तु वह मानसिक नहीं मालूम होती, फिर भी यह सशरीर मन की पहली अवस्था है।

जैव और दैहिक विकास की शक्ति गौण, क्रमगत घटक है जो मन के अपने अगले विकास के लिये आवश्यक है। एक बार भौतिक शरीर में स्नायविक प्राणशक्ति प्रकट हो जाय तो वह एक ऐसी जैव शक्ति को प्रकट करती है कि अधिक **स्नायविक क्रियाशीलता** के लिये एक अधिक जटिल भौतिक यंत्र विकसित होता चले।

एक बार भौतिक **यंत्र-विन्यास** की अमुक जटिलता को प्राप्त कर ले तो ऐसा लगता है कि जीवन अनिश्चित कालतक किसी सूक्ष्म रीति से स्नायविक शक्ति की क्रियाओं को सूक्ष्म रूप से बदलता, सुधारता रह सकता है ताकि मन की अधिकाधिक सूक्ष्म और जटिल क्रिया को सहारा दे सके।

क्रमशः अगले अंक में...

www.the-comforter.org

कहानी...

'परमात्मा से मिलवा सकते हो?'

संन्यासी ने कहा, 'बिल्कुल बेफिक्र रहो, मेरा काम ही ईश्वर से मिलाने का है। तुम अच्छे आ गए, हम तो इसी खोज में फिरते हैं कि कोई मिलने वाला, मिल जाए तो दिखा दें।' राजा थोड़ा घबराया कि यह तो गड़बड़ है। उसने पूछा, 'एकांत में मिलवाइएगा कि सबके सामने?' राजा आशंकित था। लेकिन संन्यासी ने कहा कि मिलना तो एकांत में ही पड़ेगा।

परमात्मा से मिलने को आतुर था राजा। हर ज्ञानी से यही प्रश्न करता।

ईश्वर से मिलवा सकते हो?

इस संन्यासी से भी यही कहा। क्या इस बार वह मिल पाया?

एक संन्यासी युवक सारी दूनिया घूमकर हिंदुस्तान वापस आया। वह एक छोटी-सी रियासत में मेहमान हुआ। उस रियासत के राजा ने उस युवक से कहा 'मैं ईश्वर से मिलना चाहता हूँ, क्या आप मिलवा सकते हैं?'

राजा ने यह प्रश्न न मालूम कितने ही संन्यासियों से पूछा था कि ईश्वर से मिलवा सकते हैं? अब कोई कैसे मिलवाता? तो बेचारे संन्यासी उपनिषद् और वेदों के वचन निकाल-निकालकर समझाने की कोशिश करते थे, लेकिन वह कहता था कि 'मैं मिलना चाहता हूँ। ये बातें छोड़िये। बातचीत से क्या होगा? मुझे मिलवाइए।' मिलवाता कौन है। इस युवक से भी वही प्रश्न पूछा।

संन्यासी ने कहा, 'अभी मिलेंगे या थोड़ी देर ठहर सकते हैं?'

वह राजा थोड़ा हैरान हुआ। यह कभी उसने सोचा भी नहीं था। उसे थोड़ा शक हुआ कि यह पागल तो नहीं है? यह कुछ गलत तो नहीं समझ गया? कई लोग ईश्वर नाम रख लेते हैं।

उसने पूछा, 'स्वामी जी, मैं किसी ईश्वर नाम के आदमी से नहीं मिलना चाहता हूँ, मैं ऊपर वाले ईश्वर से मिलने की बात कर रहा हूँ।'

संन्यासी ने कहा, 'बिल्कुल बेफिक्र रहो, मेरा काम ही ईश्वर से मिलाने का है। तुम अच्छे आ गए, हम तो इसी खोज में फिरते हैं कि कोई मिलने वाला, मिल जाए तो दिखा दें।' राजा थोड़ा घबराया कि यह तो गड़बड़ है। उसने पूछा, 'एकांत में मिलवाइएगा कि सबके सामने?' राजा आशंकित था।

संन्यासी ने कहा, 'मिलना तो एकांत में ही पड़ेगा। आप मय दरबार के वहाँ नहीं जा सकते। आज तक कोई भगवान् से मिलने मित्रों के साथ नहीं गया। आप अपने पत्नी- बच्चों को भी नहीं ले जा सकते।'

सोचकर आता हूँ। यह झंझट की बात है।'

लेकिन उस संन्यासी ने कहा, 'सोचकर आप बाद में आना, पहले आप एक बात तो सुन लो। मिल तो सकते हो, लेकिन पहले मिलने की 'पात्रता' का सवाल है।'

उसने कहा, 'क्या पात्रता है?'

संन्यासी ने कहा, 'बहुत छोटी-सी बात है। एक कागज पर लिखकर दे दें कि "आप कौन हैं? तो यह परमात्मा तक पहुँचा दूँ। फिर वे मिलने का वक्त दे देंगे।"

राजा ने कहा, 'यह ठीक है। मैं भी किसी से मिलता हूँ तो पहले लिखवा लेता हूँ, कौन हो, क्या हो?'

उसने अपना नाम-पता लिख दिया कि कौन बहादुर सिंह, क्या है, कौन से महल में रहता है, किस रियासत का राजा है, सब लिखकर दे दिया। संन्यासी ने कहा, 'यह पता तो बिल्कुल झूठा मालूम पड़ता है। इसकी जाँच-परख करनी होगी, तभी मिलवाया जा सकता है। यह नाम भी सच्चा नहीं मालूम पड़ता।'

राजा ने कहा, 'यह फिजूल की बातें कर रहे हो। मुझे पहले शक हो गया था जब तुमने भगवान् से मिलाने की बात कही थी। कौन कह सकता है कि मेरा नाम झूठा है? यह पूरी बस्ती मुझे जानती है, मेरी राजधानी है। किसी को भी बुलाकर पूछ लो।'

उसने कहा, 'किसी को बुलाकर पूछने की ज़रूरत नहीं है। तुमसे ही पुछूंगा। अगर तुम्हारा नाम बदल दिया जाए तो तुम बदल जाओगे? या तुम्हारे मां-बाप नाम दे देते तो तुम दूसरे हो जाते?'

राजा ने कहा, 'नाम बदलने से क्या फ़र्क पड़ता? मैं तो मैं ही रहता।

संन्यासी ने कहा, 'जब नाम बदलने से कोई फ़र्क नहीं पड़ता, तो फिर यह कहना कि यह नाम मैं हूं, एकदम ग़लत बात है।' फिर उसने

www.the-comforter.org

कहा, 'आज तुम राजा हो, कल भिखारी हो जाओ, तो बदल जाओगे ?'

राजा ने कहा, 'नहीं भिखारी रहकर भी मैं तो मैं ही रहूँगा। राज-पाट चला जाएगा, धन-दौलत चली जाएगी, लेकिन मैं तो मैं ही रहूंगा'

फिर संन्यासी ने कहा, 'तो परिचय में यह भी मत कहो कि मैं राजा हूँ। तुमने अपनी उम्र क्यों लिखी है इसमें ? क्या बूढ़े होकर तुम बदल जाओगे ?'

राजा ने कहा, 'नहीं, बुढ़ा होकर मैं ही रहूँगा। उम्र बदल जाएगी, शरीर बदल जाएगा, लेकिन जो बचपन में था, वही जवानी में, वही बुढ़ापे में रहूंगा।'

संन्यासी ने कहा, 'फिर यह भी ग़ैर-जरूरी बात है। न तुम्हारे नाम से तुम्हारा कोई सम्बंध है, न राज्य से, न उम्र से, न शरीर से। फिर तुम कौन हो ?'

वह राजा बोला, 'यह तो पता नहीं।'

तो उस संन्यासी ने कहा, 'जिसे यह भी पता नहीं है कि मैं कौन हूँ, वह ईश्वर से मिलने निकल पड़ा है तो नासमझ है या नहीं ? तो तुम कृपा करो, पहले यह तो पता लगा लो कि तुम कौन हो, फिर ईश्वर से मिलने की फ़िकर करना। अभी तुम अपना ही पता लगा लो।' जाते-जाते संन्यासी ने कहा, 'एक बात तुम्हें याद दिलाए देता हूँ, जिस दिन तुम यह जान लोगे कि तुम कौन हो उसी दिन तुम यह भी जान लोगे कि परमात्मा क्या है ?'

परमात्मा तो सबके भीतर छिपा हुआ प्राण है। यह जो अस्तित्व है यही परमात्मा है। और उसे जानने के लिए, कहीं जाना नहीं पड़ता, खुद को जान लेना पड़ता है। जो स्वयं को जानता है, वह सत्य को जान लेता है, सर्व को जान लेता है। मैं सबके भीतर बैठे परमात्मा को प्रणाम करता हूँ।

समर्थ सद्गुरुदेव का यही दर्शन है कि **''मनुष्य स्वयं परमात्मा है, वह पापी नहीं है।''**

गुरुदेव द्वारा बताई गई आराधना से साधक अपने निज स्वरूप को जान लेता है, फिर उसे यह उत्कण्ठा नहीं रहती कि मुझे परमात्मा के दर्शन करने है, जिनसे मिलने की चाह होती है, वह वहीं बन जाता है जो हमारे वैदिक दर्शन का सर्वोत्तम वाक्य है-**''तत्त्वमसि''** अर्थात् तू वही है जो परमात्मा है।

www.the-comforter.org

कुछ महत्त्वपूर्ण शब्दों के अर्थ-

नीरव- जिसमें ध्वनि न हो, शब्द रहित, जो शब्द न करे, मन की चंचलता पूरी तरह से शांत हो जाए, मन में परम शांति की अवस्था।

नीरस-जिसमें रस न हो,रसहीन सूखा, जिसमें कोई आकर्षण या रूचिकर बात या तत्त्व न हों,आनंदरहित, शुष्क स्वभाव का व्यक्ति।

निस्पृह-वासनारहित, इच्छारहित, जिसे किसी प्रकार का लोभ या कामना न हो, निर्लोभी।

निष्कर्ष-मापन, निकालना, सार, सारांश, खुलासा, विचार या विवेचन के बाद निकलने वाला सिद्धांत, बाहर करना,नतीजा, निश्चय, निचोड़ निकालने की क्रिया,निःसारण।

निष्काम-बिना किसी कामना या इच्छा के किया जाने वाले कार्य, आसक्ति रहित, निरीह। भगवान् श्री कृष्ण ने गीता में बार बार श्री अर्जुन को समझाया है कि हे अर्जुन ! निष्काम भाव से कर्म किये जा, फल की इच्छा न कर।

निषेधाज्ञा-वह आज्ञा जो कोई होता हुआ अन्यायपूर्ण कार्य रोकने के लिए किसी न्यायालय द्वारा दी जाय।

निषेधाधिकार-(वीटो) किसी देश के राष्ट्रपति या प्रधान शासक का विधानसभा द्वारा स्वीकृति किसी प्रस्ताव को न मानने या कार्यान्वित होने से रोक देने का पाँच महान् राष्ट्रों में से प्रत्येक को प्राप्त विशेषाधिकार।

निष्फल-बिना फल का, निर्वीर्य, बेकार, जिसका कुछ परिणाम न हो, निरर्थक, व्यर्थ, जिससे कुछ अर्थ न सिद्ध हो, जिसका कुछ फल न हो,जिसमें फल न लगे, पयाल।

❖❖❖

दिव्य ज्ञान प्राप्ति का पथ

सद्गुरुदेव के पावन चरणों में पूर्ण समर्पण

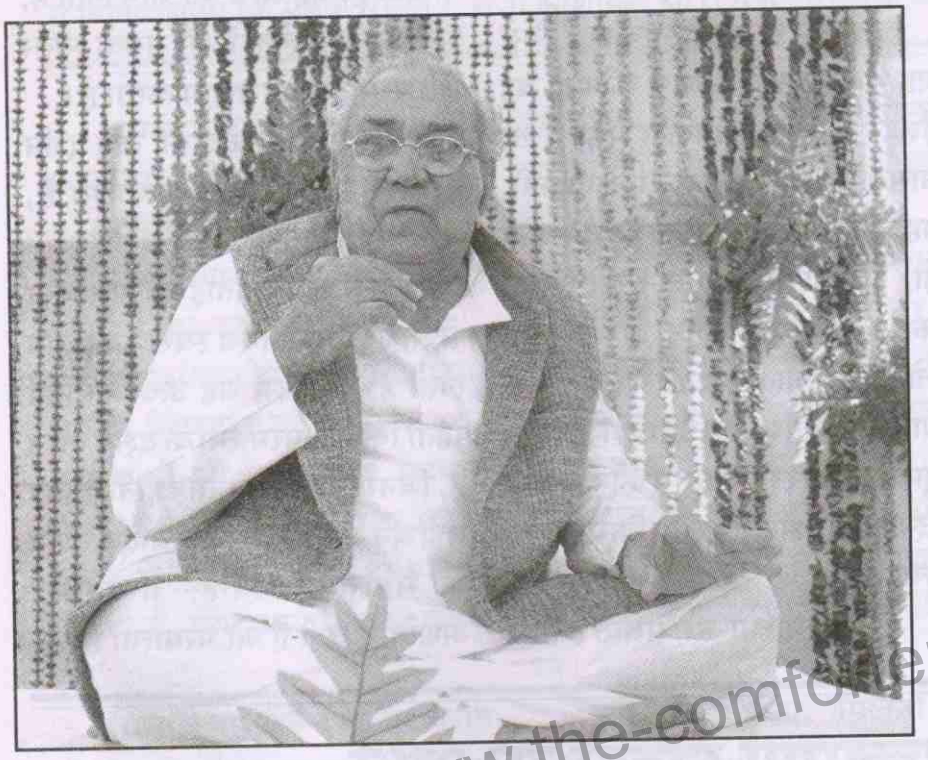

प्रवृत्तिमार्गी समर्थ सद्गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग, अपने सद्गुरुदेव बाबा श्री गंगाईनाथ जी योगी (ब्रह्मलीन) की अहैतुकी कृपा के कारण प्राप्त असीम दिव्य ज्ञान रूपी "कृपा-प्रसाद" बाँटने विश्व में निकले है।

www.the-comforter.org

इस दिव्य ज्ञान को प्राप्त करने का एक मात्र तरीका है-सद्गुरुदेव के पावन चरणों में आंतरिक भाव से पूर्ण समर्पण। इसका यही मूल्य है। इसे भौतिक धन से, चतुराई से, चोरी से, धोखे से, डरा-धमका कर प्राप्त नहीं किया जा सकता। सद्गुरु जब हृदय से प्रसन्न होते हैं, तभी मंत्र का रहस्य खोलते हैं, और मंत्र मोक्ष देता है, अन्यथा नहीं।

-सद्गुरुदेव द्वारा स्थापित
Avsk संस्था के संविधान से

मुख्यालयः- अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, जोधपुर
होटल लेरिया के पास, चौपासनी, जोधपुर (राज.)-342001
संपर्क-0291-2753699, मो. 09784742595
Website:www.the-comforter.org, Email-avsk@the-comforter.org

जोधपुर (लालसागर से चैनपुरा रोड़ पर)-राजस्थान पत्रिका के आयोजित ''हमराह हेल्थ केयर'' कार्यक्रम में सिद्धयोग प्रदर्शनी का आयोजन कर सैकड़ों जिज्ञासुओं को सिद्धयोग दर्शन की जानकारी देकर ध्यान कराया गया। (रविवार, 11 फरवरी 2018)

अजमेर जिले की विजय नगर तहसील के विभिन्न विद्यालयों में सिद्धयोग शिविरों का आयोजन। हजारों विद्यार्थियों को सिद्धयोग दर्शन की जानकारी देकर संजीवनी मंत्र के साथ 15 मिनट ध्यान कराया। (1 से 3 फरवरी 2018)

छत्तीसगढ़ – सरगुंजा जिले की अम्बिकापुर तहसील में सिद्धयोग शिविर आयोजित। (6 फरवरी 2018)

बाबा श्री गंगाईनाथजी योगी (ब्रह्मलीन) के पैतृक गाँव–सीरमा (पाली) में ध्यान सिद्धयोग शिविर आयोजित।

www.the-comforter.org

गंगापुर सिटी में ध्यान सिद्धयोग शिविर आयोजित (19 -22 फरवरी 2018)

शहर के कई विद्यालयों में संजीवनी मंत्र के जप के साथ हजारों विद्यार्थियों व शिक्षकों का 15 मिनट ध्यान कराया। कुण्डलिनी जनित योग से स्वतः होने लगी यौगिक क्रियाएँ।

www.the-comforter.org

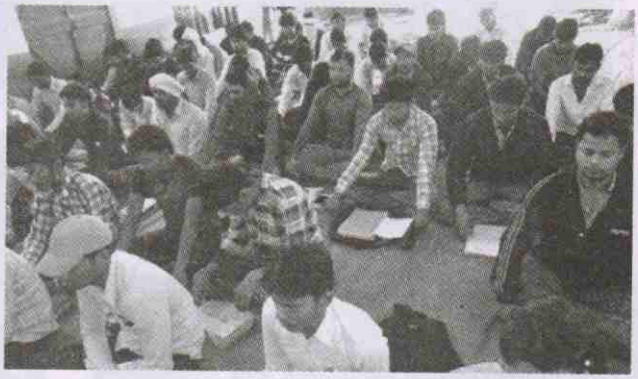

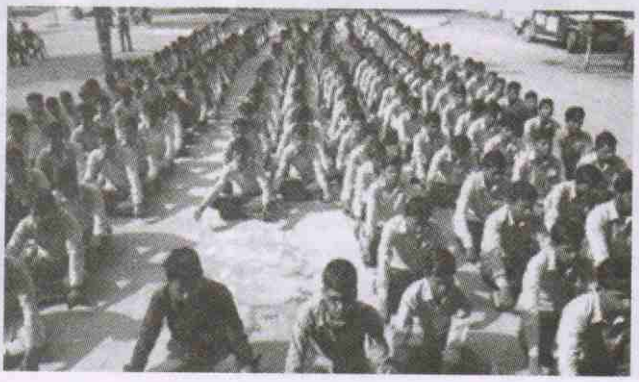

जोधपुरः-राजस्थान पत्रिका द्वारा प्रत्येक रविवार को मोर्निंग वॉक हमराह कार्यक्रम में सिद्धयोग प्रदर्शनी का आयोजन। प्रातःकालीन भ्रमण में संजीवनी मंत्र के साथ सैंकड़ों स्त्री, पुरूष व बच्चों ने 15 मिनट ध्यान कर, अंतर्मन में गोता लगाया।

(लालसागर रोड़, मगरा पुँजला - रविवार, 18 फरवरी 2018)

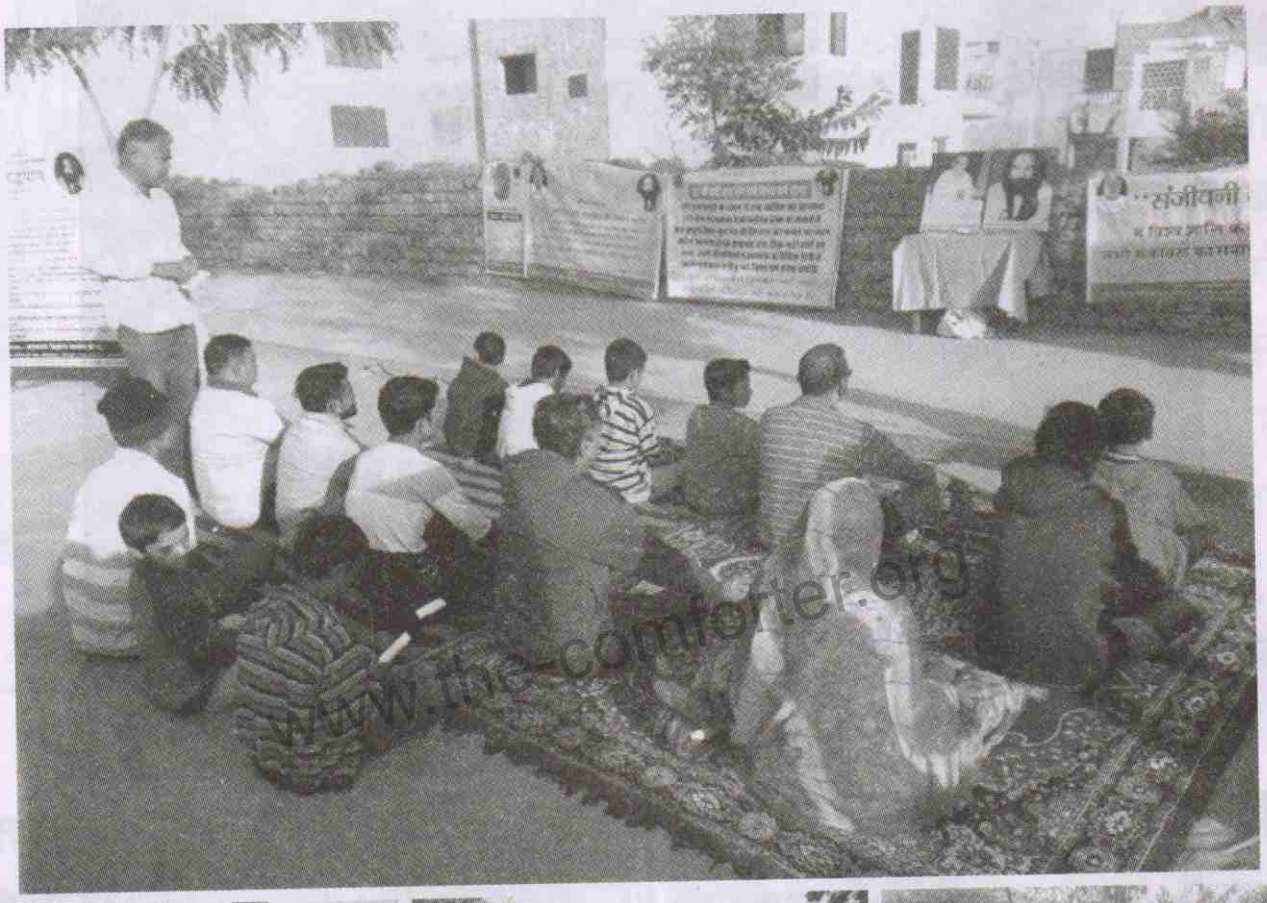

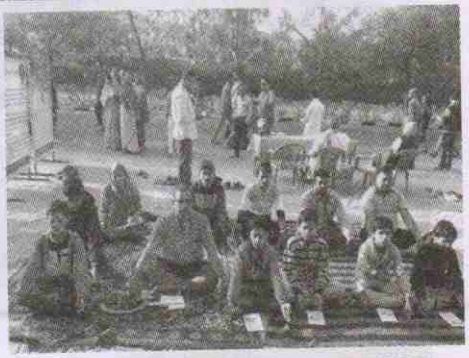

www.the-comforter.org

दुविधाओं पर विजय पायी-सिद्धयोग से

जीवन नारकीय बन गया था, आर्थिक रूप से पूरे परिवार की हालत दयनीय थी। सामाजिक प्रताड़ना से पूरा परिवार मानसिक विकृति और दुःख के सागर में डूब गया था। कहीं से भी कोई सहारा नहीं दिख रहा था। सद्गुरुदेव सियाग भगवान् की ऐसी कृपा बरसी कि हम सब समस्त दुःखों से ऊबर कर, अब सुखमय और आनंदमय जीवन जी रहे हैं। सद्गुरुदेव का सिद्धयोग भवसागर पार करता है।

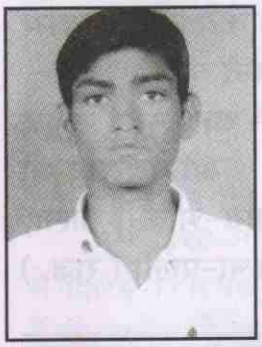

सर्वप्रथम कल्कि अवतारी समर्थ सद्गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग और दादा गुरुदेव बाबा श्री गंगाईनाथ जी योगी (ब्रह्मलीन) के श्री चरणों में दण्डवत प्रणाम।

मैंने सद्गुरुदेव के बारे में सन् 2012 से सुन रखा था।

मेरे मामाजी का लड़का अचानक बीमार हो गया था। उसने सद्गुरुदेव का नाम जप व ध्यान शुरू किया था। उसके बाद उसके जीवन में बहुत बदलाव आया। कुछ समय के लिए वह मेरे घर पर रुका था। वह गुरुदेव का नाम-जप व ध्यान करता था। उसके पास गुरुदेव का कैलेण्डर था। उसने कैलेण्डर को मेरे घर पर टांग दिया था।

मैंने कैलेण्डर को देखा तो उसमें लिखा था कि संजीवनी मंत्र के जप व नियमित ध्यान करने से एड्स व कैंसर सहित सभी रोगों व नशों से पूर्ण मुक्ति मिल जाती है। लेकिन हमने मुर्खतावश उस समय गुरुदेव के प्रति अपशब्द कहे कि ये सब ठगने का नया तरीका है, इससे कोई फायदा नहीं होता है; सिर्फ धन्धा है। लेकिन हमें क्या पता कि ये साक्षात् दसवें अवतार कल्कि है?

सन् 2014-15 में, मैं एक बहुत ही बुरे दौर से गुजरा था, मेरी परिस्थिति अचानक विपरीत हो गई। मेरे घर वालों के ऊपर समाज के लोगों ने बुरा बर्ताव करना शुरु कर दिया। मेरे परिवार को तरह-तरह की यातनाएँ दी गई। मेरी पढ़ाई लगभग खत्म हो गई थी, क्योंकि पैसों का इंतजाम करने के लिए मैंने पशुपालन का कार्य शुरू कर दिया। मैं मेरे पिताजी के साथ भेड़ों को पालने के लिए उतर प्रदेश चला गया।

मैं जनवरी 2015 में वापस घर आया। मेरा परिवार तो जून 2014 से समाज से बहिष्कृत था। मेरे दोस्त जगदीश जी जो अब गुरुभाई है, ने मुझसे कहा कि बाबुलाल कैसे हो?

मैंने अपना बुरा हाल जब उनको बताया तो उन्होंने मुझे गुरुदेव जी का कार्ड दिया और कहा कि तुम आज शाम को गुरुदेव जी से प्रार्थना करना कि, हे गुरुदेव जी ! मुझे इन गम्भीर समस्याओं से मुक्त करो। मैंने वैसे ही किया। 15 मिनट संजीवनी मंत्र के साथ ध्यान किया। आश्चर्य की बात तब घटी जब मेरे परिवार को समाज के लोगों ने मात्र 24 घंटे में ही समाज में शामिल कर दिया।

इसके बाद मेरा गुरुदेव जी के प्रति गहरा विश्वास हो गया। एक दिन मेरे मित्र जगदीश जी आश्रम जा रहे थे, यह बात 5 फरवरी 2015 की है, उन्होंने कहा कि आप आश्रम चलोगे?', मुझे तामसिक शक्तियों ने जाने से रोक दिया । गुरुभाई जगदीश जी ने मेरे लिए रोहट में एक घंटे तक इन्तजार किया। और फोन करके बोले कि 'बाबुलाल आ जाओ, मैं रोहट में खड़ा हूँ'। कैसे भी करके मैं रोहट आ गया, हम दोनों ए.वी.एस.के. जोधपुर आश्रम आ गये।

आश्रम में आकर मैं असीम आनन्द में डूब गया। गुरुदेव जी से जुड़ने से पहले मुझे हर समय खाँसी होती थी, इसलिए मुझे लोग टी.बी. लाल भी कहते थे। साथ ही मुझे बादलों से बहुत डर लगता था, मेरी हालत यह हो गई थी कि जैसे ही बादल छा जाते थे, मुझे गहरी चिन्ता घेर लेती थी कि मेरे पिताजी का क्या होगा? मुझे चिन्ता रहती थी कि नुकसान हो जायेगा।

खाँसी के कारण मेरी हालत इतनी गंभीर थी कि कई लोगों ने मेरे घर वालों को समझाया कि इसे अच्छे डॉक्टर के पास दिखाओ, लगता है कि टी.बी हो गई है। पहले मैं दोनों

www.the-comforter.org

आँखों में मोतियाबिन्द होने के कारण से बहुत परेशान था।

जैसे ही मैं पढ़ाई करने बैठता था तो मेरी दोनों आँखों में जलन होने लगती थी, यहाँ तक कि मुझे धुंधला दिखाई देता था लेकिन जैसे ही समर्थ गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग से शक्तिपात दीक्षा लेकर सुबह- शाम ध्यान और मंत्र जपना शुरू किया तो फिर यह सभी समस्याएँ धीरे-धीरे गायब होती गई।

आज जीवन की स्थिति यह है कि मैं शारीरिक और मानसिक रूप से एकदम स्वस्थ हूँ और दिव्य आनंद महसूस करता हूँ। गुरुकृपा से अब मुझे कोई समस्या नहीं है। मैं गुरुदेवजी की कृपा से आर्थिक रूप से भी ठीक हूँ, क्योंकि गुरुकृपा से वर्तमान समय में एक निजी विद्यालय में एक अध्यापक के रूप में सेवाएँ दे रहा हूँ।

मैं जयनारायण व्यास विश्व विद्यालय जोधपुर से एम.ए. प्रीवियस की पढ़ाई कर रहा हूँ, और मुझे अटल विश्वास है कि जो भी भाई-बहिन इस महिने का स्पिरिचुअल साइंस अंक को पढ़ेंगे, वे जरूर गुरुदेव श्री रामलालजी सियाग की अमर तस्वीर से सुबह-शाम ध्यान करेंगे। मैं अभी गुरुदेव के परम दिव्य सिद्धयोग दर्शन का प्रचार-प्रसार करता हूँ। परम कृपालु सद्गुरुदेव भगवान् का दिव्य मिशन विश्व दर्शन होगा। अंत में मेरी गुरुदेव जी से यही करूण प्रार्थना है कि असीम कृपा और दिव्य आशीर्वाद सदा बना रहे।

गुरुकृपा ही केवलम्, शिष्यस्य परम मंगलम्। वन्दे गुरु।

बाबुलाल सुपुत्र
श्री घेवरराम जी
गाँव-भाकरी वाला,
जिला-पाली (राज.)

www.the-comforter.org

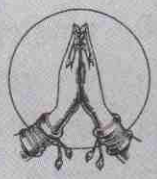

प्रार्थना

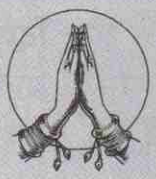

"हे प्रभो ! हे सर्वविघ्न विनाशक !
तेरी जय हो। वर दे हमारे अन्दर की
कोई भी चीज तेरे कार्य में बाधक न हों।
वर दे कि कोई भी चीज तेरी अभिव्यक्ति
में रूकावट न डालें।
वर दे कि हर वस्तु में तथा प्रत्येक क्षण में
तेरी ही इच्छा पूर्ण हो।"

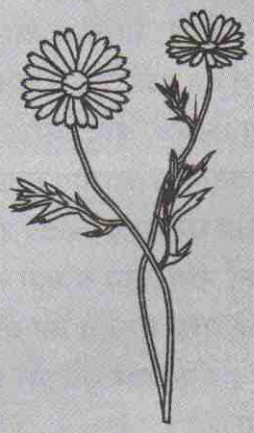

-महर्षि श्री अरविन्द आश्रम की श्रीमां

गुरु कृपा से जीवन आनंदमय हुआ

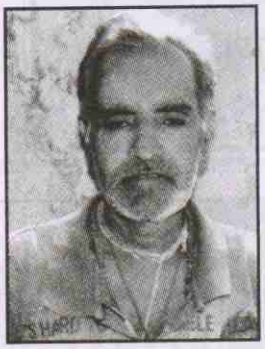

मैं रामभजन शर्मा निवासी हुसैनपुर, जिला-मुरैना का रहने वाला हूँ। पति-पत्नी दोनों गाँव में रहते हैं।

मेरे लड़का-लड़की दोनों ही मुरैना में पढ़ते हैं। जिस मकान में वो लोग रहते हैं वो गुरुदेव के साधक-शिष्य हैं जो ध्यान करवाते हैं हम भी वहाँ आते-जाते रहते हैं। गुरुदेव के ध्यान से हमारे पूरे परिवार में शांतिमय वातावरण है। परिवार के कई कार्य, जो लम्बे समय से अटके पड़े थे वो गुरु कृपा से पूर्ण हो गये। हमारे घर में शान्ति का एहसास हुआ है।

मुझे कई वर्षों से बी.पी. की शिकायत व घबराहट बनी रहती थी, बदहजमी के कारण पेट साफ नहीं होता था, भूख नहीं लगती थी। जबसे मैंने ध्यान किया है, तबसे सभी बीमारियों से मुक्ति मिल गई। जबसे ध्यान कर रहे हैं तब से पूरे परिवार में शान्ति, बच्चों की पढ़ाई में उत्साह बढ़ गया है। मुझे ध्यान में बैठते ही यौगिक क्रियाएँ होने लगती हैं। एक बार ध्यान में गुरुदेव के दर्शन हुए। कई बार ध्यान के दौरान प्रकाश दिखाई देता है। कभी पूरा ब्रह्माण्ड घूमता हुआ दिखता है !

हमारे उलझे हुए कार्य सभी सफल हो रहे हैं। मैं सद्गुरुदेव के पावन चरण कमलों में कोटि-कोटि नमन् करता हूँ।

-रामभजन शर्मा,
उम्र 55 वर्ष
निवासी हुसैनपुर (उ.प्र.)

कुण्डलिनी महाविज्ञान की जानकारी हुई

जिस मात्र शक्ति कुण्डलिनी के बारे में, मैं कई वर्षों से जानना चाहता था वह जानकारी दि. 24.12.2017 को मुरैना जाने पर प्राप्त हुई तो मुझे विश्वास हुआ कि दुनिया की ऐसी अदृश्य शक्ति है जो मानव मंदिर के भीतर निवास करती है और सद्गुरु कृपा से जाग्रत होती है।

मैं सन्त प्रेमदास उम्र 60 साल पूर्व में आर्मी में नौकरी करता था। 14-15 वर्ष पूर्व सेवानिवृत्त होकर सन्यास ले लिया है। ग्राम- दुमदुमा करैरा पिछोर, जिला-शिवपुरी का निवासी हूँ। साधु सन्तों की संगत में कुण्डलिनी शक्ति के बारे में भी चर्चा होती, मगर कोई नहीं बता सका।

5-6 साल से मेरे पेट में गैस बनने लगी। भूख न लगना, चक्कर आना, पेट साफ न होना, इसका इलाज कई डॉक्टरों से कराया, मगर कोई फायदा नहीं मिला। मेरे गुरु भाई उनका नाम भी प्रेमदास है जो मुरैना एम.एस रोड़, राम-जानकी मन्दिर में पूजा पाठ करते हैं। वहीं लोकल क्षेत्र के रहने वाले हैं। मेरा सौभाग्य या ईश्वरीय कृपा से दि. 23.09.2017 को एक गुरुभाई के वहाँ मुरैना गया था। वो उस दिन बाहर गये हुए थे। दि. 24.09.2017 को एक वयोवृद्ध साधक व उनके साथ दो बालक थे और उनके पास तमाम मासिक पत्रिकाएँ थी।

वह कुण्डलिनी शक्ति के बारे में विस्तार से बता रहे थे। मैंने मासिक पत्रिकाओं में साधकों के अनुभव और आध्यात्मिक लेख पढ़े। कुछ विश्वास हुआ कि कोई शक्ति तो है तब ऐसा परिवर्तन आता होगा ? वह बड़े-बड़े दो फोटो भी लाए थे, एक फोटो मन्दिर की दीवार पर लगाकर मैंने व उन बालकों ने ध्यान किया, मुझे 2-3 मिनट के अन्दर ही हल-चल सी होने लगी, शान्ति महसूस हुई, ऐसा लगा कि मैं झूम रहा हूँ। उन बालकों का भी ध्यान लगा, मुझे विश्वास हो गया कि जिस मकसद की मुझे तलाश थी, आज वह पूरी हो गई। मुरैना में 2-3 दिन हमने ध्यान किया, दो दिन में मेरे गांजे की लत छूट गई। फिर आश्रम में जाकर ध्यान किया तो मेरा गहरा ध्यान लगने लगा। आठ दिन में गैस व पेट की खराबी ठीक हो गई।

मैं सद्गुरुदेव व दादा गुरुदेव को बारम्बार धन्यवाद करता हूँ, जिनकी कृपा से मेरा लक्ष्य हासिल हुआ। जीवन धन्य हुआ। सद्गुरुदेव के पावन चरणों में बारंबार नमन् करता हूँ।

- संत प्रेमदास बाबा
करैरा आश्रम, पिछोर,
शिवपुरी (एम.पी.)

www.the-comforter.org

दिव्य रूपान्तरण

संजीवनी मंत्र द्वारा सातों कोशों का विकास-

अन्नमय कोश, प्राणमय कोश, मनोमय कोश, विज्ञानमय कोश, आनंदमय कोश, चित्मय कोश व सत्मय कोश।

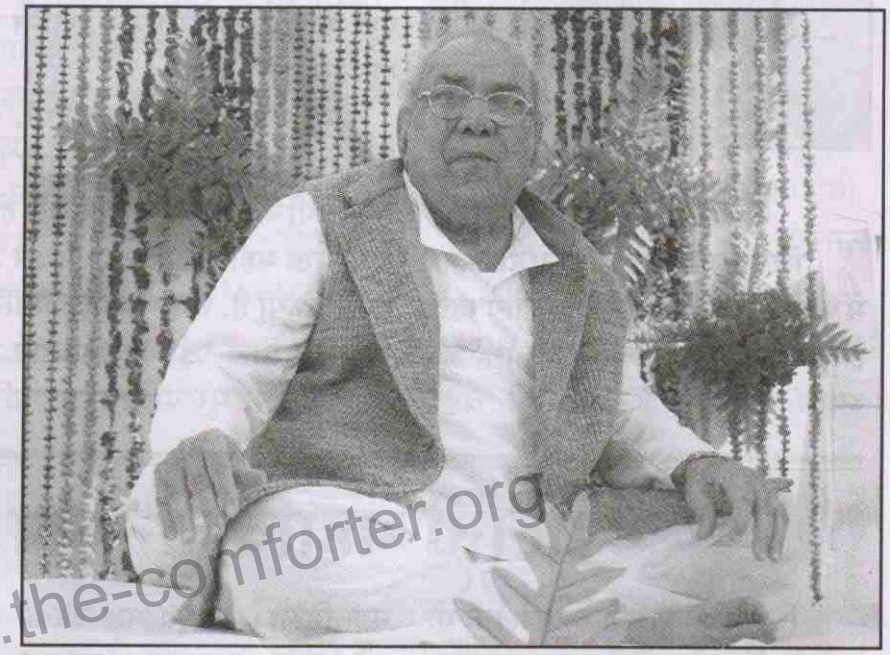

महर्षि श्री अरविन्द की भविष्यवाणी है-"**आगामी मानव जाति दिव्य शरीर धारण करेगी।**" यह फिजिकल बॉडी डिवाइन रूप में बदल जाएगी। यह साइंस वाले बड़े आश्चर्य कर रहे हैं, यह क्या कह रहा है ? यह तो मनुष्य जाति में होने वाला ड्यू(बाकी, अगला) विकास है, आश्चर्य नहीं।

देखिए जब ऋग्वेद, मनुष्य शरीर की रचना की बात करता है तो कहता कि सात प्रकार के तत्त्वों से इस मनुष्य शरीर का संघटन हुआ है, उसमें आत्मा अन्तर्निहीत है। फिर जब वह अलग-अलग तत्त्वों की बात करता है, सेल्स की बात कहता है तो मेटर से शुरु करता है। वह अन्न से बनने वाले कोश-अन्नमय कोश, प्राणमय कोश, मनोमय कोश और विज्ञानमय कोश, फिर आनन्दमय कोश, चित्मय कोश और सत्मय कोश तो इस प्रकार सात कोशों में से चार कोश खूब चेतन हो गए-**अन्न,प्राण,मन और विज्ञान।**

विज्ञान ने तो 20वीं सदी में खूब तरक्की कर ली। अब विज्ञान एक जगह आकर स्थिर हो गया। इससे इनकी समस्याओं का समाधान नहीं हो पा रहा है, इसलिए वैज्ञानिकों से मिलने ही निकला हूँ कि भईया तुम्हारी समस्याओं का समाधान तब तक नहीं होगा जब तक बाकी तीनों कोश चेतन नहीं हो जाते। जब चार चेतन हो गए तो तीन कोश चेतन होने का कोई तरीका होगा ?

पर यह बात केवल "**भारत**" जानता है,भारत का वैदान्ती जानता है ! संसार का कोई धर्म, कोई दर्शन नहीं जानता तो इस आराधना से, पहले-पहले आपका आनन्दमय कोश चेतन हो जाएगा फिर चित् में पहुँच जाओगे, और उसके बाद सत् में तो इस प्रकार सातों कोश चेतन हो जाएंगे। आप अपने असली स्वरूप में बदल जाओगे। कोई जादू नहीं, कोई करिश्मा नहीं, आपका **क्रियात्मक विकास** है। हर जाति के, हर धर्म के लोगों में यह बदलाव आ रहा है। यह मानवीय धर्म है तो इस प्रकार नाम जप व ध्यान से, आप में यह परिवर्तन आएगा।

-समर्थ सद्गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग

www.the-comforter.org

मनुष्य ईश्वर का स्वरूप है

जिसका नाम जप रहे हो, उसी के रूप में परिवर्तित हो जाओगे। तब तक मौत पीछा नहीं छोड़ेगी। मोक्ष कोई काल्पनिक स्थिति नहीं है; वस्तु स्थिति है, क्रियात्मक बदलाव आता है।

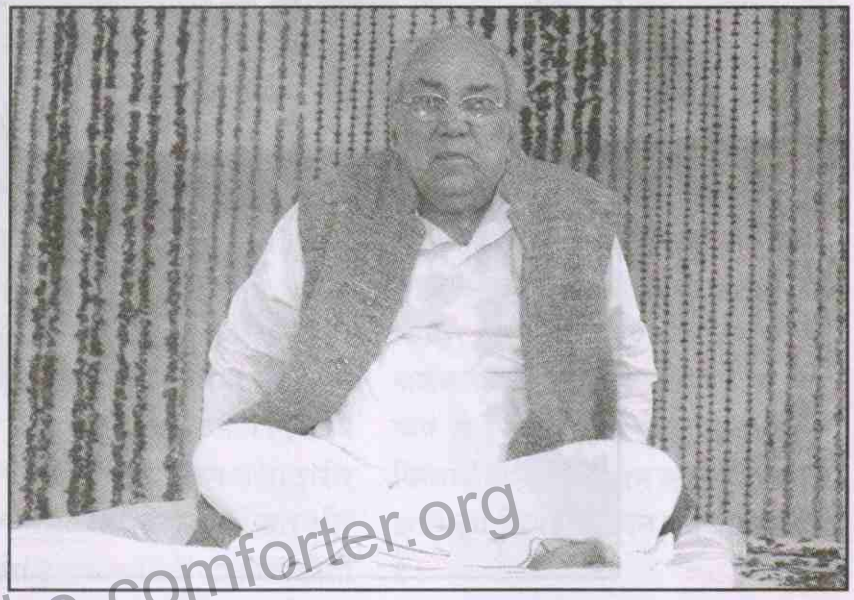

मनुष्य को ईश्वर का स्वरूप क्यों माना है? एक चीज तो आपको मालूम है-पाँच तत्त्वों से शरीर बना-आकाश, वायु, अग्नि,जल और पृथ्वी। और सारा ब्रह्माण्ड आप के अन्दर है। जो ब्रह्माण्ड में है, वही पिण्ड में है। जो पिण्ड में है, वह ब्रह्माण्ड में है तो जब सारा ब्रह्माण्ड आप में है तो फिर आकाश तत्त्व तो ऊँचे ही ऊँचे स्थान को कहेंगे; इसको योगियों ने 'सहस्रार' की संज्ञा दी है। योग की भाषा में आकाश की सूक्ष्म तन्मात्रा शब्द। हमारे संतों और ऋषियों ने इसे पकड़ा और उसका नाम रख दिया-'ॐ', बाकी किसी धर्म ने नहीं पकड़ा। उस परम् तत्त्व की प्रत्यक्षानुभूति और साक्षातकार किसी ने नहीं किया, सिवाय वैदान्तियों के।

www.the-comforter.org

अब देखिए, ॐ अर्थात् ईश्वर। आकाश की सूक्ष्म तन्मात्रा-'शब्द'। ॐ रूप बदलता हुआ नीचे आ रहा है, आकाश से वायु प्रकट होती है उसकी सूक्ष्म तन्मात्रा-'स्पर्श', वायु से अग्नि प्रकट हुई तो उसकी सूक्ष्म तन्मात्रा-'स्वरूप', अग्नि से जल प्रकट हुआ उसकी सूक्ष्म तन्मात्रा-'स्वाद', जल से पृथ्वी प्रकट हुई उसकी सूक्ष्म तन्मात्रा-'गंध'। इस प्रकार पृथ्वी में पाँचों तत्त्व हैं। और पृथ्वी से हम सब पैदा हुए।

इस तरह से वह परमतत्त्व ॐ अर्थात् ईश्वर रूप बदलते-बदलते इस रूप (मनुष्य रूप) में आकर बैठ गया। इसलिए मनुष्य को ईश्वर का स्वरूप माना है। इस प्रक्रिया को उलट दो, एक-एक तत्त्व को जीतते हुए, ऊपर उठते हुए यहाँ (सहस्रार) पर अपने असली स्वरूप में क्यों नहीं बदल जाता। सांईटिफिक बात है-एक प्रोसेस से इस रूप में (मनुष्य रूप में) आया; दूसरे प्रोसेस से अपने असली फॉर्म (स्वरूप) में बदल जाओगे। कुण्डलिनी जाग्रत होकर उर्ध्वगमन करती हुई, सहस्रार में पहुँचती है; उसी का नाम 'मोक्ष' है। वह आपको अपने असली फॉर्म में बदलवा देगी। जिसका नाम जप रहे हो, उसी के रूप में परिवर्तित हो जाओगे। तब तक मौत पीछा नहीं छोड़ेगी। मोक्ष कोई काल्पनिक स्थिति नहीं है; वस्तु स्थिति है, क्रियात्मक बदलाव आता है।

-समर्थ सद्गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग

नाम जप और ध्यान द्वारा

भौतिक व आध्यात्मिक समस्याओं का समाधान

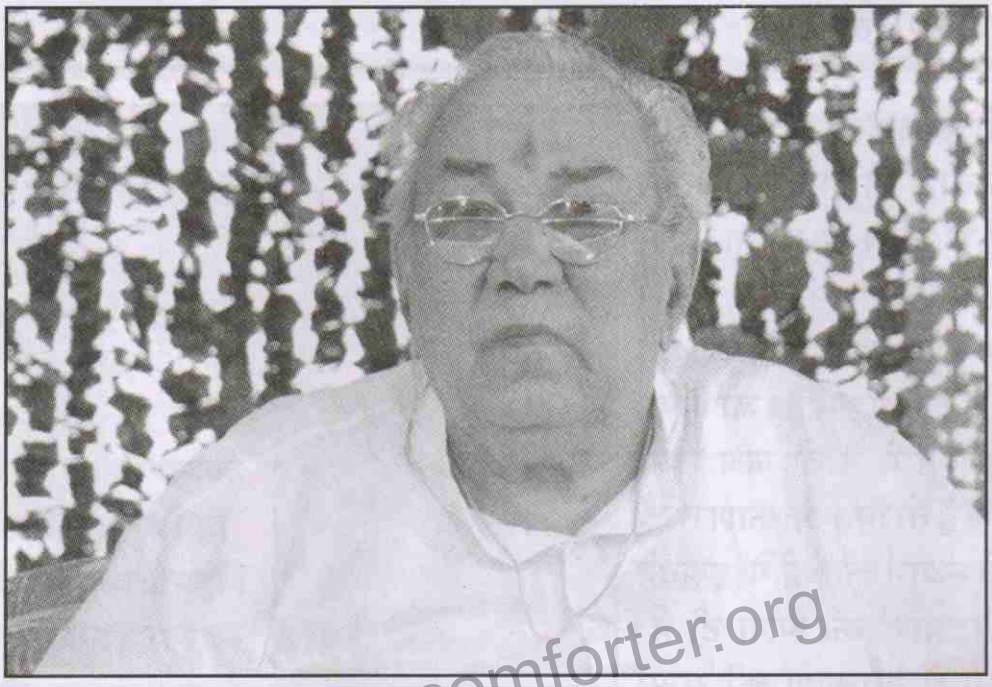

www.the-comforter.org

मैंने लाखों को यह करके बता दिया तो इस प्रकार यह नाम जप और ध्यान आप करोगे उससे आपकी भौतिक समस्याओं का समाधान हो जाएगा As wel as (साथ ही साथ)आध्यात्मिक समस्याओं का समाधान भी हो जाएगा। बाहर और अन्दर का विकास एक साथ होगा।

यही एक ऐसी आराधना है, जहाँ **''कुण्डलिनी जागरण''** का विषय **(Subject)** है। इसमें भोग और मोक्ष दोनों साथ चलते हैं। बाकी जितनी भी आराधनाएँ हैं-उनमें **भोग** है तो **मोक्ष** नहीं, मोक्ष है तो भोग नहीं; एक का त्याग करना पड़ता है। इसमें त्याग नहीं है, इसमें गीता वाला **निष्काम कर्म योग** है तो इस तरह से मैंने आपको जानकारी दी-कि यह तो बहुत विशाल दर्शन है। पूरी व्याख्या करना किसी के वश की बात नहीं है।

मैंने आपको मोटे -मोटे सिद्धान्त बता दिये कि मनुष्य में यह परिवर्तन आराधना से आ सकता है। और अब नाम बता दूँ-गुरुदेव की दिव्य आवाज में मंत्र सुनने के लिए डॉयल करें-07533006009 या संस्था की वेबसाइट देखें-

www.the-comforter.org

-समर्थ सद्गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग

गतांक से आगे....

हठयोग

फलतः, सिद्ध हठयोगी का शरीर सहिष्णुता और बल तथा अथक शक्ति-प्रयोग के ऐसे करतबों को कर सकता है कि जिन्हें मनुष्य की सामान्य भौतिक शक्तियाँ अपनी पराकाष्ठा को पहुँचकर भी नहीं कर सकती।

वास्तव में, बात ऐसा प्रतीत होता है कि शरीर ने इसे अपने अन्दर धारण नहीं किया है और न वह इसे अधिकृत एवं प्रयुक्त ही करती है, वरन् सच पूछो तो उसीने शरीर को अपने अन्दर धारण किया है तथा वही उसे अधिकृत और प्रयुक्त करती है-जैसे कि चंचल सक्रिय मन में जब कोई आध्यात्मिक शक्ति प्रविष्ट होती है तो वह इस पर अधिकार जमाकर अनियमित तथा अपूर्ण रूप में इसका प्रयोग करता प्रतीत होता है, पर यही आध्यात्मिक शक्ति जब प्रशान्त मन में आती है तो उसे धारण करती है तथा अधिकृत करके प्रयोग में लाती है।

इस प्रकार शरीर अपने-आपसे मुक्त हो जाता है, अपनी बहुत-सी अव्यवस्थाओं एवं अनियमितताओं से रहित होकर शुद्ध हो जाता है और आसन के द्वारा आंशिक रूप से तथा आसन और प्राणायाम की सम्मिलित प्रक्रिया के द्वारा तो पूर्ण रूप से ही एक सिद्ध यन्त्र बन जाता है। इसके अन्दर जो शीघ्र ही थक जाने की प्रवृत्ति है, उससे यह मुक्त हो जाता है; यह स्वास्थ्य की अमित शक्ति प्राप्त कर लेता है; क्षय, जरा और मरण की इसकी प्रवृत्तियाँ अवरुद्ध हो जाती हैं।

साधारण आयुर्मान के बहुत आगे पहुँची हुई अवस्था में भी हठयोगी शारीरिक जीवन के बलवीर्य, स्वास्थ्य और यौवन को अक्षुण्ण बनाये रखता है; यहाँ तक कि दैहिक यौवन का बाह्य स्वरूप भी दीर्घकाल तक सुरक्षित रहता है। उसमें दीर्घजीवन की शक्ति औरों की अपेक्षा कहीं अधिक होती है, और उसके दृष्टिकोण से, शरीर के यन्त्र होने के कारण, दीर्घकाल तक इसे सुरक्षित रखना तथा उस सारे काल में इसे क्षयकारी दोषों से मुक्त रखना कोई कम महत्त्व की बात नहीं है। यह भी ध्यान में रखने योग्य है कि हठयोग में इतने प्रकार के आसन हैं जिनकी कुल संख्या अस्सी से ऊपर पहुँचती है।

उनमें से कुछ तो अत्यन्त ही जटिल और दुष्कर हैं। आसनों की इतनी अधिक विविधता कुछ तो ऊपर दिखाये गये परिणामों में वृद्धि करने तथा शरीर के प्रयोग में अत्यधिक स्वाधीनता और नमनीयता प्रदान करने में सहायक होती है, पर साथ ही यह शरीर की भौतिक शक्ति और पृथ्वी की शक्ति जिसके साथ कि वह सम्बद्ध है--इन दोनों के सम्बन्ध को बदलने में भी सहायता करती है।

इसका एक परिणाम यह होता है कि पृथ्वी-शक्ति का भारी पंजा ढीला पड़ जाता है जिसका पहला लक्ष्य यह है कि शरीर थकावट की प्रवृत्ति पर विजय पा लेता है और अन्तिम लक्षण यह है कि उत्थापन या आंशिक लघिमा के अद्भुत दृग्विष्य का प्रत्यक्ष अनुभव होता है।

स्थूल शरीर सूक्ष्म शरीर की प्रकृति को कुछ-कुछ प्राप्त करके प्राणशक्ति के साथ इसके सम्बन्धों को कुछ अंश में आयात्त करने लगता है; वह एक अधिक महान् शक्ति का रूप धारण कर लेता है जो अधिक सबल रूप में अनुभूति है और फिर भी एक अपेक्षाकृत हल्की, मुक्त और अधिक सूक्ष्मता योग्य भौतिक क्रिया को सम्पन्न कर सकती है तथा ऐसी शक्तियाँ भी प्राप्त कर सकती है जो अपनी पराकाष्ठा को पहुँचकर हठयोग विद्धियों या गरिमा, महिमा, अणिमा और लघिमा की असाधारण शक्तियों में परिणत हो जाती है। इसके अतिरिक्त प्राण स्थूल इन्द्रियों और करणों की क्रिया पर, उदाहरणार्थ, हृदय की धड़कनों और श्वास-प्रश्वास पर पूर्ण रूप से निर्भर रहना छोड़ देता है। ये क्रियाएं अन्त में जीवन की समाप्ति या क्षति हुए बिना स्थगित की जा सकती हैं।

यह सब आसन और प्राणायाम चरम-परम परिणति है, तथापि यह एक आधारभूत भौतिक शक्ति और स्वतन्त्रतामात्र है। हठयोग का उच्चतर उपयोग तो अधि घनिष्ठ रूप से प्राणायाम पर निर्भर करता है। आसन अत्यधिक प्रत्यक्ष रूप में सम्पूर्ण भौतिक सत्ता के अधिक स्थूल भाग पर कार्य करता है; यद्यपि यहाँ भी इसे प्राणायाम की सहायता की जरूरत पड़ती है। प्राणायाम आसन से प्राप्त होनेवाली भौतिक निश्चलता और आत्म-नियन्त्रण को लेकर चलता है और अधिक प्रत्यक्ष रूप में सूक्ष्मतर प्राणिक भागों पर अर्थात् स्नायुमण्डल पर कार्य करता है।

-श्री अरविन्द, 'योग समन्वय' पुस्तक से

क्रमशः अगले अंक में...

www.the-comforter.org

गतांक से आगे....

अहं से मुक्ति

इस विषय में पूर्णयोग के साधक के लिये सन्देह-द्विविधा का कोई स्थान नहीं हो सकता; ज्ञान के अन्वेषक के रूप में उसे किसी अधबीच की और आकर्षक या अत्युच्च एवं अनन्य वस्तु की नहीं, बल्कि सर्वांगीण ज्ञान की ही खोज करनी होगी।

उसे उच्चतम शिखर तक उड़ान भरनी होगी, पर साथ ही अपने-आपको अधिकतम विशाल और व्यापक भी बनाना होगा, दार्शनिक विचारों की किसी कट्टरतापूर्ण रचना के साथ अपने-आपको नहीं बांधना होगा, बल्कि अन्तरात्मा के समस्त उच्चतम, महत्तम और पूर्णतम अगणित अनुभवों को स्वीकार तथा धारण करने के लिये स्वतन्त्र रहना होगा।

यदि आध्यात्मिक अनुभव की सबसे ऊँची चोटी, समस्त उपलब्धि का अनन्य शिखर व्यक्ति और विश्व के परे अवस्थित परात्पर के साथ अन्तरात्मा का पूर्ण एकत्व है तो उस एकत्व का विस्तृततम क्षेत्र यह उपलब्धि है कि स्वंय वह परात्पर ही भागवत मूलतत्त्व और भागवत प्रकृति की इन दोनों प्राकटयकारी शक्तियों का उद्गम, आश्रय एवं आधार है तथा अन्दर से गठन करने वाला और उपादानभूत आत्मा एवं सारतत्त्व भी हैं पूर्णयोग के साधक का मार्ग कोई भी क्यों न हो, उसका ध्येय यही होना चाहिये।

कर्मयोग भी तबतक सार्थक, परिपूर्ण तथा सफलतापूर्वक सिद्ध नहीं होता जबतक साधक परात्पर के साथ अपनी तात्त्विक और समग्र एकता अनुभव नहीं कर लेता तथा उस एकता में निवास नहीं करने लगता। उसे भागवत संकल्प के साथ एक होना ही होगा-अपनी उच्चतम, अन्तरतम तथा विशालतम सत्ता और चेतना में, अपने कर्म और संकल्प में, अपनी कार्यशक्ति में, अपने मन, प्राण और शरीर में नहीं तो वह केवल व्यक्तिगत कर्मों के भ्रम से ही मुक्त होगा, पर पृथक् सत्ता और पृथक् करणों के भ्रम से मुक्त नहीं होगा।

भगवान् के सेवक और यन्त्र के रूप में वह कर्म करता है, पर उसके रस का मुकुट तथा इसका पूर्ण आधार या हेतु तो, जिनकी वह सेवा करता तथा जिन्हें चरितार्थ करता है उनके साथ एकत्व प्राप्त करना ही हैं भक्तियोग भी तभी पूर्ण होता है जब प्रेमी और प्रियतम एक हो जाते हैं और दिव्य एकत्व के परमोल्लास में समस्त भेद मिट जाता है, परन्तु इस एकीभाव का रहस्य यह है कि इसमें एकमात्र सत्ता तो प्रियतम की ही रह जाती है, पर प्रेमी का भी निर्वाण या लय नहीं होता। उधर, ज्ञानमार्ग का स्पष्ट लक्ष्य है केवल उच्चतम एकत्व, उसका आवेग है पूर्ण एकतव की पुकार, उसका आकर्षण है इस एकत्व का अनुभवः परन्तु यह उच्चतम एकता ही उसके अन्दर अपनी अभिव्यक्ति के क्षेत्र के रूप में यथा सम्भव-विस्तृततम वैश्व विशालता का रूप ग्रहण कर लेती है।

अपनी त्रिविध प्रकृति की व्यावहारिक अहंता से तथा उसकी आधारभूत अहं-बुद्धि से क्रमश पीछे हटने की आवश्यक शर्त का पालन करते हुए हम अध्यात्मसत्ता एवं आत्मा का, इस अभिव्यक्त मानव-व्यक्तित्व के प्रभु का, साक्षात्कार प्राप्त कर लेते हैं, परन्तु हमारा ज्ञान तबतक समग्र नहीं हो सकता। जब तक हम व्यक्ति में अवस्थित इस जीव को विश्व के आत्मा के साथ एक नहीं कर देते और इन दोनों के ऊर्ध्वस्थिति महत्तर सत्स्वरूप को अवर्णनीय - पर अज्ञेय नहीं-परात्परता में प्राप्त नहीं कर लेते। उस जीव को अपने-आपको उपलब्ध करके भगवान् की सत्ता में उत्सर्ग कर देना होगा।

मनुष्य की अन्तरात्मा को सर्व के आत्मा के साथ एक करना होगा; शांत व्यक्ति की आत्मा को असीम शांत में अपने-आपको उंडेल देना होगा और फिर परात्पर अनन्त में उस विश्वात्मा को भी अतिक्रम कर जाना होगा।

यह तब तक नहीं किया जा सकता जब तक अहंबुद्धि को दृढ़तापूर्वक जड़मूल से न उखाड़ फेंका जाय। ज्ञानमार्ग में मनुष्य अहं के विनाश के लिये दो प्रकार से प्रयत्न करता है, एक तो निषेधात्मक रूप में अर्थात् अहं की सत्यता से ही इंकार करके, दूसरे, भावात्मक रूप में, स्वयं एकमेव और अनन्त के या सर्वत्र व्याप्त एकमेव और अनन्त के विचार पर मन को सतत एकाग्र रखकर।

यह साधना यदि दृढ़तापूर्वक की जाय तो अन्त में यह हमारे अपने ऊपर तथा सम्पूर्ण जगत् के ऊपर हमारी मानसिक दृष्टि को परिवर्तित कर देती है और हमें एक प्रकार का मानसिक साक्षात्कार प्राप्त हो जाता है; पर बाद में क्रमशः या शायद तीव्र वेग से और अनिवार्य रूप से तथा लगभग आरम्भ में ही वह मानसिक साक्षात्कार गहरा होकर आध्यात्मिक अनुभव में-हमारी सत्ता के असली सारतत्त्व में उत्पन्न होने वाले साक्षात्कार में परिणत हो जाता है।

-श्री अरविन्द, 'योग समन्वय' पुस्तक से

क्रमशः अगले अंक में...

www.the-comforter.org

गतांक से आगे....

समाधि

समाधि की अवस्था में जीवन का त्याग करने से वह सीधे ही सत्ता की उस उच्चतर भूमिका को प्राप्त कर लेता है, जिसकी वह अभीप्सा करता है।

समाधि की यह अवस्था दूरदर्शन तथा दूरश्रवण आदि की अद्भुत घटनाओं में से बहुत-सी की व्याख्या कर देती है; क्योंकि इन घटनाओं का अर्थ यही है कि जाग्रत् मन एक ऐसी अवस्था में असाधारण रूप से प्रवेश पा लेता है जो एक विशेष प्रकार की स्मृति के प्रति सीमित रूप में सचेतन होती है, इस स्मृति को सूक्ष्म आकाश में विद्यमान प्रतिमाओं की स्मृति कहा जा सकता है।

इसके द्वारा भूत और वर्तमान की ही नहीं बल्कि भविष्य की भी सब वस्तुओं के संकेतों को ग्रहण किया जा सकता है; क्योंकि भविष्य की वस्तुएं मनके उच्चतर स्तरों पर ज्ञान और अन्तर्दृष्टि के प्रति पहले से ही संसिद्ध हो चुकी होती है और उनकी प्रतिमाओं का प्रतिबिम्ब वर्तमान काल में मन पर पड़ सकता है।

ये चीजें जाग्रत् मन के लिये अपवाद-रूप एवं दुष्प्राय हैं तथा इन्हें एक विशिष्ट शक्ति को अधिगत करके या फिर श्रमसाध्य अभ्यास के द्वारा ही अनुभव किया जा सकता है, पर समाधि-चेतना की स्वप्नावस्था के लिये ये सहज-स्वाभाविक है क्योंकि उसमें प्रच्छन्न मन स्वतंत्र होता है और यह मन नाना स्तरों पर वस्तुओं का बोध भी प्राप्त कर सकता है। यह बोध वह इन इन्द्रियगोचर प्रतिमाओं के द्वारा ही नहीं प्राप्त करता बल्कि एक विशेष प्रकार से विचार को जानकर या अपने अन्दर ग्रहण एवं अंकित करके भी प्राप्त करता है, विचार को जानने आदि की यह क्रिया चेतना के उस अद्भुत व्यापार से मिलती-जुलती होती है जिसे आधुनिक मनोविज्ञान में विचार-संक्रमण का नाम दिया गया है। परन्तु स्वप्नावस्था की शक्तियां यहीं समाप्त नहीं हो जातीं। इसमें मन हमारी सत्ता को मनोमय या प्राणमय शरीर के एक सूक्ष्म रूप में एक प्रकार से बाहर प्रक्षिप्त करके अन्य भूमिकाओं और लोकों में या इस लोक के सुदूर स्थानों एवं दृश्यों में सचमुच प्रवेश कर सकता है, एक प्रकार की प्रत्यक्ष शारीरिक सत्ता के साथ उनमें विचारण कर सकता है और उनके दृश्यों, सत्यों तथा घटना-चक्रों के प्रत्यक्ष अनुभव को जागरित अवस्था में ले आ सकता है।

इसी प्रयोजन के लिये वह साक्षात् मनोमय या प्राणमय शरीर का भी बाहर प्रक्षेप कर सकता है तथा उसके द्वारा सर्वत्र पर्यटन कर सकता है, ऐसा करते समय वह स्थूल शरीर को ऐसी प्रगाढ़तम समाधि में छोड़ जाता है कि जब तक वह इसमें वापिस नहीं आ जाता तब तक इसमें जीवन का कोई चिह्न नहीं प्रतीत होता।

परन्तु समाधि की स्वप्नावस्था का सबसे बड़ा महत्त्व इन अधिक बाहरी चीजों में नहीं हैं उसका सबसे बड़ा महत्त्व तो यह है कि वह विचार, भावावेग और संकल्प की ऐसी उच्चतर भूमिकाओं और शक्तियों को सहज में उन्मुक्त करती है जिनके द्वारा आत्मा उच्चता, विशालता और आत्म-प्रभुता में वर्धित होती हैं विशेषकर, इन्द्रिग्राह्य वस्तुओं के द्वारा उत्पन्न विक्षेप से पीछे हटकर आत्मा एकाग्रतापूर्ण एकान्त की पूर्ण शक्ति में, स्वतंत्र तर्क, विचार और विवेक के द्वारा अथवा इससे अधिक अन्तरंग एवं चरम रूप में उत्तरोत्तर गंभीर अन्तर्दर्शन एवं तादात्म्य के द्वारा अपने-आपको इस प्रकार तैयार कर सकती है कि भगवान्, परम आत्मा एवं परात्पर सत्य को, उसके मूल तत्त्वों तथा उसकी शक्तियों एवं अभिव्यक्तियों को और साथ ही उसके उच्चतम मूल सत्स्वरूप को भी प्राप्त कर सके। अथवा, मानों आत्मा के एक आवृत और निभृत कक्ष में अनन्य आन्तरिक हर्ष और भावावेश के द्वारा वह अपने-आपको दिव्य प्रियतम के साथ एवं समस्त आनन्द और परमोल्लास के स्वामी के साथ मिलन का आह्लाद प्राप्त करने के लिये तैयार कर सकती है।

पूर्णयोग की दृष्टि से समाधि की इस प्रणाली में एक हानि दिखायी दे सकती है। वह यह कि जब समाधि समाप्त होती है तो सूत्र भंग हो जाता है और आत्मा बाह्य जीवन की विक्षिप्त और अपूर्ण अवस्था में वापिस आ जाती है, हां, इस बाह्य जीवन पर उसका उतना उन्नायक प्रभाव अवश्य पड़ता है जितना कि इन गंभीरतर अनुभवों की सामान्य स्मृति उत्पन्न कर सकती हैं परन्तु यह खाई या दरार अनिवार्य हो ऐसी बात नहीं है।

-श्री अरविन्द, 'योग समन्वय' पुस्तक से

क्रमशः अगले अंक में...

www.the-comforter.org

शक्तिपात-दीक्षा

"दीक्षा"

समर्थ सद्गुरुदेव
श्री रामलाल जी सियाग

गुरु-शिष्य परम्परा में दीक्षा का, एक विधान है। सभी प्रकार की दीक्षाओं में **"शक्तिपात - दीक्षा"** सर्वोत्तम होती है। इसमें गुरु अपनी इच्छा से, चार प्रकार से शिष्य की शक्ति (कुण्डलिनी) को चेतन करके सक्रिय करता है - (1) **स्पर्श से (2) दृष्टि मात्र से (3) शब्द (मंत्र) से (4) संकल्प मात्र से भी।** दीक्षा के बाद साधक को तत्काल उस परमतत्त्व की प्रत्यक्षानुभूति होती है, उस दीक्षा को **"शाम्भवी दीक्षा"** कहते हैं। यह महान् दीक्षा है। बहुत ही थोड़े साधकों को ऐसी दीक्षा की शक्ति के प्रभाव को सहने की सामर्थ्य होती है। ऐसे साधकों को पातंजलि योगदर्शन में **"भवप्रत्यय योगी"** की संज्ञा दी है। इस सम्बन्ध में समाधिपाद के 11 वें सूत्र में कहा है-

भवप्रत्ययो
विदेहप्रकृतिलयानाम्। (19-1)

" विदेह और प्रकृतिलय योगियों का (उपर्युक्त योग) भवप्रत्यय कहलाता है।"

(1) स्पर्श दीक्षाः-इसमें गुरु अपनी शक्ति; शिष्य में तीन स्थानों - भ्रूमध्य में अर्थात् आज्ञा-चक्र में, दूसरा हृदय, तीसरा मेरूदण्ड के नीचे मूलाधार पर स्पर्श करके प्रवाहित करता है।

(2) मंत्र दीक्षाः- गुरु की शक्ति, शिष्य में मंत्र के द्वारा प्रवाहित होती है। 'गुरु' जिस मंत्र की दीक्षा देता है, उसे उसने लम्बे समय तक जपा हुआ होता है। मंत्र शक्ति को आत्मसात किया हुआ होता है। उस मंत्र में और गुरु में कोई अन्तर नहीं रहता। **गुरु का सम्पूर्ण शरीर मंत्रमय बन जाता है, ऐसे चेतन मंत्र की, गुरु जब दीक्षा देता है, वही मुक्ति देता है।**

(3) दृष्टि (हक-दीक्षा):- अर्थात् मात्र दृष्टि द्वारा दी जाने वाली दीक्षा। ऐसी दीक्षा देने वाले गुरु की दृष्टि, **"अन्तर-लक्षी"** होती है। यह दीक्षा वही गुरु दे सकता है, जिसने सद्गुरु से दीक्षा ली हुई हो, और जो स्वयं भी अन्तर लक्षी हो। अन्यथा यह दीक्षा देना पूर्ण रूप से असम्भव है।

ऐसे महात्माओं की आँखें खुली होती है, परन्तु वास्तव में उनका ध्यान निरन्तर अन्तरात्मा की ओर ही लक्षित रहता है। ऐसे संतों की तस्वीर देखने से सही स्थिति का पता लग जाता है। ऐसे संतो में-संत सद्गुरुदेव श्री नानक देवजी महाराज, संत श्री कबीर दासजी, श्री रामकृष्ण परमहंस इत्यादि अनेक संत हमारी पवित्र भूमि में प्रकट हो चुके हैं।

मेरे परम पूज्य, मोक्षदाता संत सद्गुरुदेव बाबा श्री गंगाईनाथजी योगी (ब्रह्मलीन) भी उपर्युक्त संतों की स्थिति में पहुँचे हुए, परम-सिद्धयोगी थे। यह सच्चाई सद्गुरुदेव का चित्र देखते ही प्रकट होती है। ऐसे परम दयालु सर्वशक्तिमान, मुक्तिदाता सद्गुरुदेव की, अहैतु की कृपा के कारण ही मेरे जैसे साधारण व्यक्ति में भी वह शक्ति प्रकट हो गई।

(4) मानस (संकल्प-दीक्षा) जिसमें गुरु से दीक्षा लेने का मानस बनाने मात्र से ही दीक्षा मिल जाती हैं। ऐसे कई उदाहरण मुझे मेरे आध्यात्मिक जीवन में देखने को मिले हैं। मेरे अनेक शिष्य हैं, जिनमें कुछ तो अत्यधिक चेतन हैं। उनसे बातें करने से तथा मेरी व गुरुदेव की तस्वीर देखने मात्र से कई लोगों का ध्यान लगने लगता हैं तथा यौगिक क्रियाएँ स्वतः होने लगती हैं। परन्तु ऐसे शिष्य बहुत कम ही हैं। इस तथ्य से एकलव्य की प्रतीक-साधना सत्य प्रमाणित होती है।

हमारे शास्त्रों के अनुसार जब तक मनुष्य की कुण्डलिनी जाग्रत होकर सहस्रार में नहीं पहुँचती, तब तक मोक्ष नहीं होती। पृथ्वी तत्त्व का आकाश तत्त्व में लय होने का नाम ही मोक्ष है, कैवल्यपद की प्राप्ति है। सिद्धयोग अर्थात् महायोग में शक्तिपात-दीक्षा द्वारा गुरु अपनी शक्ति से शिष्य की कुण्डलिनी को जाग्रत करता है। गुरु की व्याख्या करते हुए कहा गया है- "वह शिष्यों को उनके अन्तर में प्रभावी किन्तु सुप्त शक्ति (कुण्डलिनी) को जाग्रत करता है और साधक को उस परमसत्य से साक्षात्कार-योग्य बनाता है।"

कुण्डलिनी जागरण के सम्बन्ध में कहा है -

"यावत्सा निद्रिता देहे
तावत जीवः पशुर्यथा।
ज्ञानम् न जायते
तावत कोटियोग-विधैरपि।"

स्वामी विष्णु तीर्थ - शक्तिपात।।

"जब तक कुण्डलिनी शरीर में

सुषुप्तावस्था में रहेगी, तब तक मनुष्य का व्यवहार पशुवत् रहेगा। और वह उस दिव्य-परमसत्ता का ज्ञान पाने में समर्थ नहीं होगा, भले ही वह हजारों प्रकार के यौगिक अभ्यास क्यों न करे।''गुरु कृपा रूपी, शक्तिपात दीक्षा से जब कुण्डलिनी जाग्रत होती है, तब क्या होता है? इस सम्बन्ध में कहा है -

सुप्त गुरु प्रसादेन
यदा जागृति कुण्डली।
तदा सर्वानी पद्मानि
भिदयन्ति ग्रन्थयो पि च।।
(''स्वात्माराम, हठयोग
प्रदीपिका''-3,2)

''जब गुरुकृपा से सुप्त कुण्डलिनी जाग्रत हो जाती है, तब सभी चक्रों और ग्रन्थियों का (ब्रह्मग्रन्थि, विष्णुग्रन्थि और रूद्रग्रन्थि) भेदन होता है। इस प्रकार साधक समाधि स्थिति, जो कि समत्त्व बोध की स्थिति है, प्राप्त कर लेता है। शक्तिपात होते ही साधक को प्रारब्ध कर्मों के अनुसार विभिन्न प्रकार की यौगिक क्रियाएँ (आसन, बन्ध, मुद्राएँ एवं प्राणायाम) स्वतः ही होने लगती हैं। शिष्य में जाग्रत हुई शक्ति (कुण्डलिनी) पर गुरु का पूर्ण प्रभुत्व रहता है, जिससे वह उसके वेग को नियन्त्रित और अनुशासित करता है।

कुण्डलिनी को हमारे शास्त्रों में 'जगत् जननी' कहा है। वह उस परमसत्ता का दिव्य प्रकाश है, जो सर्वज्ञ है, सर्वत्र है, सर्वशक्तिमान है। अतः जिस साधक की कुण्डलिनी जाग्रत हो जाती है, उसे अनिश्चितकाल तक के भूत-भविष्य एवं वर्तमान काल की प्रत्यक्षानुभूति एवं साक्षात्कार होने लगता है।

भौतिक विज्ञान मानता है कि जो शब्द बोला जा चुका है, वह कभी नष्ट नहीं होता। अगर मानव के पास उपयुक्त यन्त्र हो तो उसे पुनः सुना जाना सम्भव है। हमारा योगदर्शन कहता है कि केवल सुना ही नहीं जा सकता है, बोलने वाले को बोलते हुए देखा-सुना जाना भी सम्भव है। जो फिल्म बन चुकी है, उसको देखने-सुनने में क्या कठिनाई है।

हमारा योग-दर्शन तो स्पष्ट शब्दों में कहता है कि जो घटना नहीं घटी है, उसको भी देखा व सुना जाना संभव है। अनेक शिष्य इसको प्रमाणित करने में सक्षम हैं। हमारा पतंजलि योगदर्शन उपर्युक्त तथ्यों को प्रमाणित करता है। इसी शक्तिपात-दीक्षा के कारण ही पश्चिम को दिव्य आनन्द और अनिश्चित काल तक के भूत-भविष्य की प्रत्यक्षानुभूति और साक्षात्कार होगा, बाइबल की भविष्यवाणियों का मात्र यही अर्थ है।

प्रेरितों के कार्य के 2:14 से 18 में स्पष्ट शब्दों में कहा है -'' पतरस उन ग्यारह के साथ खड़ा हुआ और ऊँचे शब्द से कहने लगा, कि हे यहूदियों, हे यरूशलेम के सब रहने वालों, यह जान लो और कान लगाकर मेरी बातें सुनो। जैसा तुम समझ रहे हो, ये नशे में है, ऐसा नही, क्योंकि अभी तो पहर ही दिन चढ़ा है।

परन्तु यह बात है, जो योएल भविष्यवक्ता के द्वारा कही गई है! कि परमेश्वर कहता है कि अन्त के दिनों में ऐसा होगा कि मैं अपना आत्मा सब मनुष्यों पर उड़ेलूँगा और तुम्हारे बेटे और तुम्हारी बेटियाँ भविष्यवाणी करेंगी और तुम्हारे जवान दर्शन देखेंगे और तुम्हारे पुरनिए (वृद्ध) स्वप्न देखेंगे। वरन् मैं अपने दासों और अपनी दासियों पर भी उन दिनों में अपने आत्मा में से उड़ेलूँगा और वे भविष्यवाणी करेंगे।''

इसी संदर्भ में, जिस सहायक के भेजने की भविष्यवाणी यीशु ने की है, उसी की शक्तिपात-दीक्षा के कारण यह दिव्य-आनन्द और ज्ञान प्राप्त होगा। इस सम्बन्ध में प्रेरितों के कार्य 2:33 में कहा है - ''इस प्रकार परमेश्वर के दाहिने हाथ से सर्वोच्च पद पाकर और पिता से वह पवित्र आत्मा प्राप्त करके जिसकी प्रतिज्ञा की गई थी, उसने यह उँड़ेल दिया है, जो तुम देखते और सुनते हो।''

इस शक्तिपात-दीक्षा का वर्णन अनेक दार्शनिक ग्रन्थों में मिलता है। जैसा कि स्वामी श्री विवेकानन्द जी ने कहा है, ''यह ज्ञान मात्र हमारे दर्शन की ही देन है।'' परन्तु कलियुग के गुणधर्म के कारण यह दिव्य विज्ञान इस समय हमारी धरती पर से लोप प्रायः हो चुका है। शक्तिपात-दीक्षा के बाद, मेरे साधकों की कुण्डलिनी शक्ति जाग्रत हो जाती है। इससे उन्हें विभिन्न प्रकार की यौगिक क्रियाएँ जैसेः- आसन, बन्ध, मुद्राएँ एवं प्राणायाम स्वतः होने लगते हैं। वह शक्ति (कुण्डलिनी) साधक का शरीर, प्राण, मन और बुद्धि अपने स्वायत(अधीन) कर लेती है।

इस प्रकार साधक को जो विभिन्न प्रकार के आसन्न, बन्ध, मुद्राएँ और प्राणायाम होते हैं, उनमें साधक का स्वयं का प्रयास कुछ भी नहीं रहता है। न तो वह उन्हें करने की स्थिति में होता है और न ही रोकने की। भौतिक विज्ञान के वैज्ञानिकों को इस दिव्य विज्ञान के कारण, अनेक समस्याओं का समाधान करने में भारी सफलता मिलेगी। कुण्डलिनी (चित्ति) उस

www.the-comforter.org

परमसत्ता का दिव्य प्रकाश है। अतः उसमें ज्ञान की "पराकाष्ठा" है। वह अजर-अमर है तथा सर्वज्ञ एवं सर्वत्र है। अतः उसके जाग्रत होने पर साधक को भूत, भविष्य एवं वर्तमान की पूर्ण जानकारी होने में कोई आश्चर्य नहीं है। ईश्वर को सच्चिदानन्द धन (सत् चित् व आनन्द) कहते हैं।

अतः कुण्डलिनी के जाग्रत होने पर साधक को इन्द्रियातीत दिव्य अक्षय आनन्द की निरन्तर प्रत्यक्षानुभूति होने लगती है। इस दिव्य आनन्द के सामने सभी प्रकार के नशों से घृणा हो जाती है और बिना किसी प्रकार के कष्ट के, उनसे सहज रूप में पूर्ण मुक्ति मिल जाती है। मेरे साधकों में बहुत लोग ऐसे हैं जो शराब, अफीम, भांग, गांजा आदि के नशों से बुरी तरह ग्रसित थे। इस दिव्य आनन्द के कारण सभी साधक उन सभी प्रकार के नशों से, बिना किसी प्रकार के शारीरिक कष्ट या मानसिक कष्ट के पूर्ण रूप से मुक्त हो चुके हैं।

यही नहीं इस दिव्य आनन्द के कारण मानसिक तनाव पूर्ण रूप से शान्त हो जाता है तथा उससे सम्बन्धित सभी रोग जैसे उन्माद, रक्तचाप, अनिद्रा आदि बिना दवा के स्वतः पूर्णरूप से खत्म हो जाते हैं। विद्युत उपचार से ठीक न होने वाले कई रोगी पूर्ण रूप से रोग मुक्त हो चुके हैं। दो ऐसे रोगी आये जो इन्सुलीन चिकित्सा से भी ठीक नहीं हो सके थे, इस शक्तिपात-दीक्षा से मिलने वाली आनन्द रूपी शान्ति के कारण पूर्णरूप से स्वस्थ हो चुके हैं। हमारे दर्शन में योगदर्शन के अतिरिक्त भी इस दिव्य आनन्द का वर्णन मिलता है। गीता के 5 वें अध्याय के 21 वें तथा 6 वें अध्याय के 15 वें 21वें 27 वें तथा 28 वें श्लोक में भगवान् श्रीकृष्ण ने जिस बारीकी से इस दिव्य आनन्द की व्याख्या की है, अन्यत्र कहीं नहीं मिलती।

बाह्यस्पर्शेष्वसक्तात्मा
विन्दत्यात्मनि यत्सुखम्।
स ब्रह्मयोगयुक्तात्मा
सुखमक्षयमश्नुते ।। 5:21।।

"बाहर के विषयों में आसक्ति रहित अन्तःकरण वाला पुरूष अन्तःकरण में जो भगवत्-ध्यान जनित आनन्द है, उसको प्राप्त होता है (और) वह पुरूष सच्चिदानन्दधन परब्रह्म परमात्मारूप योग में एकीभाव से स्थित हुआ, अक्षय आनन्द को अनुभव करता है।"

युञ्जन्नेवं सदात्मानं
योगी नियतमानसः।
शान्तिं निर्वाणपरमां
मत्संस्थामधिगच्छति ।। 6:15।।

"इस प्रकार आत्मा को निरन्तर (परमेश्वर के स्वरूप में) लगाता हुआ स्वाधीन मनवाला योगी मेरे में स्थित रूप परमानन्द पराकाष्ठा वाली शान्ति को प्राप्त होता है।"

सुखमात्यन्तिकं यत्तद
बुद्धि ग्राह्यमतीन्द्रियम।
वेत्ति यत्र न चैवायं
स्थितश्चलति तत्त्वतः।।
6:21।गीता

"इन्द्रियों से अतीत केवल शुद्ध हुई सूक्ष्म बुद्धि द्वारा ग्रहण करने योग्य जो अनन्त आनन्द है, उसको जिस अवस्था में अनुभव करता है और जिस अवस्था में स्थित हुआ यह योगी भगवत स्वरूप से चलायमान नहीं होता है।"

प्रशान्तमनसं ह्येनं
योगिनं सुखमुत्तमम्।
उपैति शान्तरजसं
ब्रह्मभूतमकल्मषम्।। 6:27।।

"क्योंकि जिसका मन अच्छी प्रकार शान्त है (और) जो पाप से रहित है (और) जिसका रजोगुण शान्त हो गया है, ऐसे इस सच्चिदानन्दनधन ब्रह्म के साथ एकीभाव हुए योगी को अति उत्तम आनन्द प्राप्त होता है।"

युञ्जन्नेवं सदात्मानं
योगी विगतकल्मषः।
सुखेन ब्रह्मसंस्पर्श
मत्यन्तं सुखमश्नुते ।।
6:28।।

"पापरहित योगी इस प्रकार निरन्तर आत्मा को परमात्मा में लगाता हुआ, सुखपूर्वक परब्रह्म परमात्मा की प्राप्ति रूप अनन्त आनन्द को अनुभव करता हैं।"

वैदिक मनोवैज्ञानिक (अध्यात्म विज्ञान) के अनुसार मनुष्य का शरीर सात प्रकार के कोशों (शैलों) से संघटित हैं, जिनके खोलों (कोशों) में आत्मा अन्तर्निहित है। वे हैं- (1) अन्नमय कोश (2) प्राणमय कोश (3) मनोमय कोश (4) विज्ञान मय कोश (5)आनन्दमय कोश (6) चित्मय कोश (7) सत्मय कोश। हमारे विकास की वर्तमान अवस्था में साधारण मानव ने अपने नित्य व्यवहार के लिए पहले तीन कोशों का ही विकास किया है।

कुछ मनुष्य सामर्थ्यपूर्वक विज्ञानमय कोश का प्रयोग करने में भी सक्षम है । क्योंकि इस समय विज्ञान अपने निज धाम से संचालित न होकर, बुद्धिप्रधान मन में स्थित होकर कार्य करता है। यही कारण है, विज्ञान सृजन के स्थान पर विध्वंश

www.the-comforter.org

का कार्य अधिक कर रहा है। योगी इससे भी परे साक्षात् विज्ञान (विज्ञानमय कोश के निजधाम) तक जा पहुँचता है। जब विज्ञान अपने निजधाम में संचालित होकर कार्य करेगा, तब इसका सम्पूर्ण उपयोग मात्र सृजन में ही होगा। इसीलिए महर्षि श्री अरविन्द ने भविष्यवाणी की है

''भारत, जीवन के सामने योग का आदर्श रखने के लिए उठ रहा है। वह योग के द्वारा ही सच्ची स्वाधीनता, एकता और महानता प्राप्त करेगा और योग के द्वारा ही उसका रक्षण करेगा।''

याज्ञवल्क्य जैसे महानतम ऋषि तो साक्षात् आनन्द तक पहुँच चुके हैं। परन्तु अन्तिम दो कोश अभी तक प्राप्त नहीं हो सके हैं। सिद्धयोग अर्थात् महायोग जो गुरु कृपारूपी शक्तिपात दीक्षा से सिद्ध होता है, उसके साधक सातों कोशों का ज्ञान प्राप्त करने में सफल हुए हैं।

ऐसे अनेक उदाहरण हमारे शास्त्रों में वर्णित हैं। पतंजलि योग दर्शन तो केवल 195 सूत्रों में कैवल्य पद पर पहुँचने की क्रियात्मक विधि बताता है।

''मनुष्य योनि ईश्वर की सर्वोच्च अभिव्यक्ति है।'' सभी का मत है कि मानव का सृजन उसके सृजनहार की प्रतिमूर्ति के रूप में हुआ है। **अतः मनुष्य अपना क्रमिक विकास करते हुए अपने सृजनहार के 'तद्रूप' बन सकता है।** भगवान् श्रीकृष्ण ने मनुष्य की व्याख्या करते हुए गीता के 13 वें अध्याय के 22 वें श्लोक में स्पष्ट शब्दों में कहा है-

उपद्रष्टानुमन्ता च
भर्ता भोक्ता महेश्वरः।
परमात्मेति चाप्युक्तो
देहे स्मिन्युरूषः परः।।

''पुरूष इस देह में स्थित हुआ भी पर (त्रिगुणातीत) है। (केवल) साक्षी होने से उपद्रष्टा और यथार्थ सम्मति देने वाला होने से अनुमन्ता एवं सबको धारण करने वाला होने से भर्ता, जीव रूप से भोक्ता तथा ब्रह्मादिकों का भी स्वामी होने से महेश्वर और शुद्ध सच्चिदानन्दघन होने से **''परमात्मा''** ऐसा कहा गया है।''

इस इन्द्रियातीत आनन्द को संतों ने **''हरि नाम की खुमारी''** की संज्ञा दी है। संत सद्गुरु श्री नानकदेवजी ने कहा है-

''भांग धतुरा नानका,
उतर जाय प्रभात।
''नामखुमारी '' नानका
चढ़ी रहे दिन रात।।''

संत कबीर दास जी ने कहा है-

'नाम-अमल' उतरै न भाई।
और अमल छिन्न-छिन्न चढ़ि उतरै।
नाम -अमल' दिन बढ़ै सवायो।।''

बाइबल भी स्पष्ट कहती है- ''यह एक आन्तरिक आनन्द है, जो सभी सच्चे विश्वासियों के हृदय में आता है। यह आनन्द हृदय में बना रहता है, सांसारिक आनन्द से तब तक भरता है, जब तक उमड़ न जाय। प्रभु का आनन्द जो हमारे हृदयों में बहता है, हमारे हृदयों से उमड़ कर दूसरों तक बह सकता है।''

यह आनन्द ही शान्ति स्थापित करेगा। ❖❖❖

ॐ श्री गंगाईनाथाय नमः

समर्थ सद्गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग की असीम अनुकंपा से

अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, जोधपुर

शाखा बालेसर में सिद्धयोग शिविर व सद्गुरुदेव सियाग की मूर्ति का अनावरण

दिनांक- गुरुवार, 15 मार्च 2018, समय-दिन में 11.30 बजे

कार्यक्रम स्थल-अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, जोधपुर शाखा बालेसर

जोधपुर-बालेसर हाइवे,

38 मील चौराहे के पास, 39 मील

स्थानीय संपर्क- 9828436722, 9783265947

समस्त जिज्ञासु गण सादर आमंत्रित हैं।

मुख्यालय-अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, जोधपुर, संपर्क-0291-2753699 मो. 9784742595

क्या एक निर्जीव चित्र, सजीव (मानव) पर प्रभाव डाल सकता है?

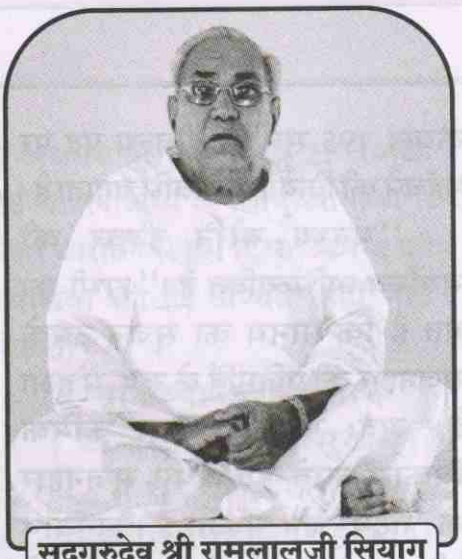

सद्गुरुदेव श्री रामलालजी सियाग

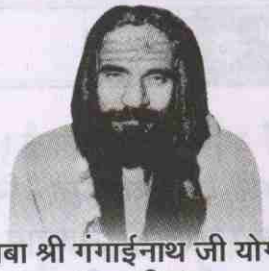

बाबा श्री गंगाईनाथ जी योगी
(ब्रह्मलीन)

प्रत्यक्ष को प्रमाण क्या? ध्यान करके देखें।

ध्यान की विधि

आरामदायक स्थिति में बैठकर थोड़ी देर के लिए गुरुदेव के चित्र को एकाग्रता से खुली आँखों से देखें। अपनी समस्या के समाधान हेतु सद्गुरुदेव से करुण प्रार्थना करें। फिर आँखें बंद करके समर्थ सद्गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग के चित्र को अपने आज्ञाचक्र पर (जहाँ बिन्दी या तिलक लगाते हैं।) केन्द्रित कर, गुरुदेव से 15 मिनट के लिए ध्यान स्थिर करने की करुण प्रार्थना करें। अब गुरुदेव द्वारा दिये गए दिव्य मंत्र का सघन जाप करें।

यदि गुरुदेव से दीक्षित नहीं हैं तो कोई भी ईश्वरीय नाम जैसे- गुरुदेव, राम, कृष्ण, वाहेगुरु, जीसस, अल्लाह आदि का मानसिक जप करें (बिना होंठ-जीभ हिलाए)। इस दौरान कोई भी यौगिक क्रिया (आसन, बंध, मुद्रा या प्राणायाम) हो तो घबराएँ नहीं तथा न ही इन्हें रोकने का प्रयास करें। ध्यान अवधि पूर्ण होते ही सामान्य स्थिति हो जाएगी। इस विधि से सुबह-शाम खाली पेट नियमित रुप से (केवल 15 मिनट) ध्यान करते रहें।

Method of Meditation

Sit in a comfortable position. Look gurudev's picture for some time then close your eyes and try to imagine gurudev at place between your eyebrows (third eye) and request for 15 minutes of meditation. While thinking of gurudev's image, silently chant (without moving your lips or tongue) gurudev's mantra or any spiritual force (**Ram, Krishna, Jesus, Waheguru, Allah etc.**) which you believe in.

During meditation if you experience any kind of automatic movement then don't try to stop. The movements will stop automatically after 15 minutes.

www.the-comforter.org

शक्तिपात-दीक्षा

शक्तिपात दीक्षा एक महान् और दिव्य विज्ञान है जिसके द्वारा सिद्धगुरु अपनी दिव्य शक्ति को शिष्य में सीधे संप्रेषित कर, उसकी सुषुप्त शक्ति कुण्डलिनी को जाग्रत करते हैं।

गुरु शिष्य परम्परा में चार प्रकार से शक्तिपात दीक्षा का विधान है। स्पर्श द्वारा, दृष्टि द्वारा, संकल्प व शब्द (मंत्र) दीक्षा द्वारा।

- गुरुदेव का मंत्र चेतन (Enlightened) मंत्र है, इसमें प्राण प्रतिष्ठा की हुई है। इस मंत्र में असंख्य ऋषियों की कमाई है।
- नाम जप ही चाबी (Key) है। इसको तेल की धार की तरह, हर समय (Round the Clock) सघन जपो।

गुरुदेव की दिव्य आवाज में संजीवनी मंत्र सुनने के लिए डायल करें–07533006009

सभी जाति–धर्मों के जिज्ञासु स्त्री–पुरुषों को स्नेह निमंत्रण।

मुख्यालय : **अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र**

होटल लेरिया के पास, चौपासनी, जोधपुर (राज.) 342 003 सम्पर्क : 0291-2753699, 9784742595

Web : www.the-comforter.org

राजकीय आदर्श उच्च माध्यमिक विद्यालय, कूकड़ा (राजसमंद) में ध्यान सिद्धयोग शिविर आयोजित। (6 फरवरी 2018)

www.the

राजकीय आदर्श उच्च माध्यमिक विद्यालय, कोट किराना (पाली) में ध्यान सिद्धयोग शिविर आयोजित। (7 फरवरी 2018)

R.N.I. NO. : RAJMUL/2008/26365 * POSTAL REGD. NO. JODHPUR/269/01.01.2017 & VALID UP TO 31.12.2019
DATE OF ISSUE : EVERY MONTH 27 & DISPATCH 28-29

अजमेर जिले की ब्यावर तहसील के विभिन्न विद्यालयों में ध्यान सिद्धयोग शिविर आयोजित। (4-5 फरवरी 2018)

अवितरित प्रति निम्न पते पर लौटायें
Spiritual Science • स्पिरिचुअल साइंस
अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, होटल लेरिया के पास, चौपासनी
पोस्ट बॉक्स नं.41, जोधपुर (राज.) 342003 फोन: 0291-2753699, मो. : 9784742595

मुद्रित सामग्री (Printed Matter)

सेवा में,

श्रीमान् _____

स्वत्वाधिकारी : अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, जोधपुर के लिए प्रकाशक व मुद्रक राजेन्द्र कुमार चौधरी के लिए ताज प्रिण्टर्स, बोराणा हाऊस, जालोरी गेट के अन्दर, जोधपुर से केवल मुद्रित एवं अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, होटल लेरिया के पास, चौपासनी, जोधपुर (राजस्थान) से प्रकाशित। सम्पादक - रामूराम चौधरी